लोगों के जोहड़

तरुण भारत संघ

लोगों के जोहड़

राजेन्द्र सिंह

तरुण भारत संघ

भीकम्पुरा किशोरी, अलवर

लोगों के जोहड़

प्रकाशक : तरुण भारत संघ

भीकमपुरा किशोरी, वाया
थानागाजी, जिला अलवर (राजस्थान)

जुलाई १९९२

मूल्य : दस रुपया

मुद्रक : अशोक प्रिंटिंग प्रैस, गली माता वाली, नई सड़क,
दिल्ली-6, फोन 3264968.

लोगों के जोहड़

संस्था का परिचय :

तरुण भारत संघ नामक संस्था जोहड़ों के निर्माण में लोगों के साथ लगी हुई है। इसका जन्म मार्च 1975 में राजस्थान की राजधानी में हुआ था। जयपुर विश्व विद्यालय परिसर में लगी आग से पीड़ितों को राहत पहुँचाने की प्रेरणा से यहाँ के प्राध्यापकों एवं सरकारी अधिकारियों ने मिलकर इसका गठन किया था। आरम्भ में नौ वर्षों तक यह संस्था शहरी तरुणों को सामाजिक काम करने के लिए प्रेरित करने का कार्य करती रही। दिसम्बर 84 में एक तरुण को ही इस संस्था का मंत्री बनाया गया। इसने संस्था को ग्रामीण परिवेश में ले जाने हेतु निर्णय कराने में सफलता प्राप्त कर ली। 2 अक्टूबर 1985 को अन्य तरुणों के साथ वह संस्था अलवर जिले के किशोरी गाँव में पहुँच गई। अनजान तरुणों को ग्रामवासियों ने हनुमान मंदिर की एक छोटी सी कोठरी में अस्थाई आश्रय दे दिया।

यहाँ के कुछ लोगों को इनकी उपस्थिति नहीं सुहाई और इन्होंने गाँव में कई तरह की अफवाहें फैला दी। कुछ संजीदा लोगों ने इन तरुणों को समझने की कोशिश की तथा पास के गाँव भीकमपुरा में एक छोटा सा मकान भी दिला दिया।

आरम्भ में श्री सुमेरसिंह जी का अच्छा सहयोग मिला। बाद में इसी गाँव के भीकम पुरा में श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता ने अपना पूरा घर ही सदा के लिए इस संस्था हेतु खोल दिया। पूरे तीन वर्ष इन्हीं के घर से संस्था का काम चला।

संस्था ने सबसे पहले बीमारों की चिकित्सा सेवा एवं बच्चों की शिक्षा का काम शुरू किया। ये दोनों काम भी संदेह की नजरों से देखे गये तथा बच्चों को उठाकर ले जाने एवं जवान लड़कियों को बहला-फुसला कर बेच देने जैसी अफवाहें भी फैलाई गई। भाल गाँव में तो इस अफवाह का बुरा असर भी हुआ। वहाँ लोगों ने संस्था द्वारा चलाये गये स्कूल को बंद करवा दिया तथा शिक्षक को बुरा भला कहकर वापस भेज दिया। इस घटना ने तरुणों को झकझोर दिया। इस मौके पर दो साथी तो काम छोड़कर वापस अपने घर चले गये, लेकिन शेष रहे साथी अपनी लगन के साथ काम में लगे रहे और ऐसी परिस्थिति बनी कि तीन माह बाद भाल गांव के लोगों ने वापस आकर कहा कि आप हमारे यहाँ स्कूल चलाओ, गाँव के लोगों के आग्रह के बाद सत्येन ने वहाँ जाकर स्कूल चलाना आरम्भ कर दिया।

गोपालपुरा गाँव में भी संस्था ने स्कूल आरम्भ कर दिया था, स्कूल चलाने वाले साथी ने यहाँ की स्थितियों को समझा, टीम के दूसरे साथियों ने भी गाँव में जाकर लोगों के साथ बातचीत की तथा भयंकर अकाल से निबटने का स्थाई हल खोज निकाला।

साथियों ने तय किया कि अकाल से निबटने हेतु यहाँ के लोगों के ज्ञान से ही काम करना चाहिए इसीलिए आज तक लगभग दो सो जोहड बनाने के लिए स्थान चयन से लेकर जोहड़ की ड़िजाइन, काम का संचालन, मूल्यांकन आदि सब काम गाँव के लोगों द्वारा ही सम्पन्न हुआ है।

अब यह संस्था जोहड़ बनाने वाली संस्था के रूप में जानी जाती है। संस्था के मुख्य कार्यकर्ता को देखकर लोग कहते हैं, जोहड़ वाला बाबा आ गया। गाँववासी आपसी बातचीत में संस्था का नाम लेकर बात करने के बजाय जोहड बनाने वाली संस्था ही कहते हैं। जब कि यह संस्था शिक्षण व स्वास्थ्य का काम भी कर रही है।

लोग जोहड़ का जैसा ड़िजाईन चाहते हैं, उस पर सामुहिक चर्चा करके वैसा ही तय करके काम आरम्भ कर देते है, ड़िजाईन पर, चर्चा करके बदल भी देते है लेकेन पूरी चर्चा के बाद उसकी लाभ-हानि सब कुछ देख-समझ कर बदलते हैं।

अब यह संस्था भी अपना मुख्य काम जोहड़ बनाना ही मानती है। संस्था ने निर्णय किया है, कि आने वाले समय में भी संस्था अपनी अधिकतर समय शक्ति जोहड़ निर्माण के काम में लगायेगी।

संस्था मूलतः रचनात्मक कार्य ही करती है। लेकिन रचनात्मक काम में जो रूकावट आती है, जैसे जिला प्रशासन एवम् सिंचाई विभाग द्वारा 1987 में संस्था द्वारा निर्मित जोहड़ों को बाँध का नाम देकर तोड़ने के नोटिस देना। इस समय हमने सरकार से सत्य को समझने का आग्रह किया। और 1 माह बाद उसी सरकार ने हमारे काम की प्रशंसा की तथा सहयोग करने की पेशकश भी की थीं।

इसी प्रकार गोचर एवम् जोहड़ की आगोर के संर्वधन का काम जब यहाँ पर हुआ तो भी जिला प्रशासन ने बिना सोचे समझे इसको बरबाद करके इसमें नई बसावट कर दी। इस सम्बन्ध में भी लोगों को उनकी सामलात देह के संर्वद्धन का हक दिलाने का आग्रह किया गया था, लेकिन कुछ अधिकारियों की हठ धर्मी के कारण उस क्षेत्र के पेड़ काटे गये तथा तथा वहाँ पर नई बसावट करा दी गई। हमने जो उस समय कहकर वहाँ बसावट करने के लिए मना किया था उस पर तब तो ध्यान नहीं दिया किन्तु कुछ दिन बाद बसाने वालो तथा वहाँ बसाये गये लोगों ने ही वह बात कही कि यह जमीन खेती योग्य नहीं बन सकती। आज तीन वर्ष बाद भी इस बेशुमार सरकारी खर्च के बाद भूमि खेती योग्य तैयार नहीं हुई तो आस-पास की दूसरी जमीनों पर उन्होंने कब्जे कर लिए, तथा जो लोग उस समय बसाये थे उनमें तो दो परिवार भगा दिये कुछ अन्य परिवार यहाँ लाकर बसाया जा रहे हैं। सामलात देह पर निजी कब्जे बढ़ रहे हैं। सामलात देह बचाने का हमारा आग्रह अभी सरकार को समझने नहीं आया है।

सरिस्का के आस-पास की वनभूमि एवम् गोचर पर कुछ राजनेताओं, अधिकारियों एवम् व्यापारियों ने अपने राज व धन सत्ता के प्रभाव से अवैध खनन काम चालू कर दिया तो लोगों नें अपने सूखते कुओं एवम् खेती को बचाने के लिए खनन बन्द करने की बात का विचार किया तो लोगों के हित में उच्चतम न्यायालय में एक याचिका दायर करके खनन से विगड़ते पर्यावरण को बचाने का प्रयास चल रहा है।

उक्त प्रयासों में संस्था का रूख लोगों के साथ रहा। इस प्रकार यह संस्था लोगों के हित केन्द्र में रखकर काम करते हुए चल रही है। यह ही इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है। संस्था के अपनी उद्देश्य पूर्ति हेतु संस्था ने एक जनवरी 1986 से 2 अक्टूबर 1992 तक निम्नालिखित कार्य किये है :

जोहड़ बनाने का पहला वर्ष 1986-87

पहले वर्ष में गोपालपुरा गाँव में केवल दो जोहड़ ही बनाये थे जिनको उस भयंकर अकाल के दिनों में लोगों ने अपने जीवन के आधार के रूप में पुनः स्वीकार करना आरम्भ किया था। इसलिए पहले वर्ष में ही इन जोहड़ों को देखकर आसपास के क्षेत्र में अति उत्साह नजर आया था। चारों तरफ इन जोहड़ों की चर्चा होने लगी थी। गाँवों से इस तरह के काम करने की इच्छा से स्वयं लोग संस्था के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करने लगे। उन्हीं दिनों एक पदयात्रा का 30जनवरी से 12 फरवरी तक आयोजन किया। इस पदयात्रा का उद्देश्य गाँवों में जोहड़ निर्माण की संभावनाओं का पता लगाने के साथ-साथ सामाजिक कुरुतियों पर चर्चा करके शराब जैसी बुरी चीजों से मुक्ति पाने का संकल्प लेना था। संस्था ने यह भी एक उद्‌देश्य बनाया था, कि जोहड़ निर्माण का काम उन्हीं गाँव में करेंगे जिस गांव में शराब बनाने एवं पीने पर लोग स्वेच्छा से पाबन्दी लगा देंगे। इस विचार का काफी असर हुआ। और इसकी सबसे पहले गोपालपुरा में पालना की गई।

यहाँ मेवालों का बाँध बनने के बाद लोगों में उसका प्रभाव समझने की जिज्ञासा हुई और आसपास के लोगों ने गोपालपुरा आकर इस जोहड़ से हुऐ लाभ को समझा और देखा।

आरम्भ में इन कार्यों में ग्रामवासियों का सहयोग नहीं मिला, मेवालों के बाँध के निर्माण के लिए सीलीबावड़ी के लोगों ने आकर के काम शुरू किया, काम चलता रहा, बन्ध का काम पूरा होने को था, तब गोपालपुरा गाँव के लोगों के मन में यह बात आयी, कि हमारे गाँव के बाँध से मजदूरी के रूप में होने वाले लाभ बाहर के लोगों को मिल रहा है, तब उन्होंने अपने गाँव से बाहर मजदूरी के लिए गये हुऐ लोगों को वापस बुलाना शुरू किया था। और धीरे-धीरे गाँव के लोग भी इस कार्य में सहयोगी बनने लगे थे। बस अब यह संस्था इन दोनों जोहड़ों के साथ ही जोहड़ बनानी वाली संस्था के रूप में प्रतिष्ठित होने लगी।

गोपालपुरा गाँव तथा उसमें जोहड़ बनाने का अनुभव :

राजस्थान के अलवर जिले की थानागाजी तहसील का यह गाँव गोपालपुरा जिला मुख्यालय से लगभग 60कि० मी० दूरी, प्रसिद्ध वन्य जीव अभयारण्य सरिस्का की परिधि के दक्षिण-पश्चिम में अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की घाटी में स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए थानागाजी से 25 कि० मी० दक्षिण में भीकमपुरा उतरकर 2 कि० मी० पैदल के रास्ते जाना पड़ता है।

लगभग 700 वर्ष पुराना गोपालपुरा गाँव "मीणा" जाति बाहुल्य है। जिसमें 52 परिवार निवास करते हैं। एक ब्राह्मण परिवार है। चार परिवार अनुसूचित जाति 'बलाई' है। ये इस गाँव में अलग ढ़ाणी बनाकर रहते है। यहाँ का मुख्य धन्धा खेती एवं पशुपालन है। यहा गाँव अलवर महाराज ने माफी घोषित किया था। जिसे 'बाल' कहते हैं। क्योंकि यह बालाजी के मन्दिर भीकमपुरा के अधीन था। यहाँ की पैदा का बड़ा भाग मन्दिर के रख-रखाव पर खर्च होता था।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक यह गाँव समृद्ध रहा, क्योंकि यहाँ का प्रकृति चक्र लगातार बना रहा। अच्छी जमीन, सिचाई के लिए "जोहड़" वन तथा पशुपालन के अच्छे गोचर थे।

"जोहड़" बरसात के पानी को इक्ट्ठा करने की यहाँ की परम्परा बहुत मजबूत थी, जिसके ऊपर यहाँ का आर्थिक सामाजिक एवं प्राकृतिक विकास टिका था। इस क्षेत्र का जल स्तर ऊपर ही था, इसलिए इसे "नेड़ा" भी कहते है। लेकिन धीरे-धीरे लोग परम्परागत तौर तरीके भूलते गये और सदियों से चला आ रहा प्रकृति चक्र टूट गया। कच्ची शराब, ओसन, नुक्ता, अशिक्षा, बाल-विवाह और रोजगार के नाम पर मायूसी का आलम यहाँ बढ़ता गया। यहाँ के युवा लोग घर छोड़कर मजदूरी के लिए निकल जाते रहे थे।

अकाल पड़ने के कारण आर्थिक स्थिति डामाडोल हो गयी थी। पशुपालन जो इनकी आय का एक मात्र स्रोत रहा वह भी सूखे के कारण जर्जर हो गया था। बचे खुचें पशुओं को लोग छोड़-2 कर शहरों की तरफ भाग गये थे। ओवर ग्रेजिंग के कारण आसपास की पहाड़ियां पहले ही बिल्कुल नंगी हो गयी थी।

गाँव की वीरान स्थिति में 1986 में तरूण भारत संघ ने इस गाँव में जोहड़ बनाने का काम आरम्भ किया था। यह काम यहाँ पर वर्षा के बाद भी सूखा का कारण समझकर काम आरम्भ किया गया था।

इस क्षेत्र में साठ (60) सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा होती है, और कुल भूमि के तीस प्रतिशत भाग पर ही खेती की जाती है। इसका नौ प्रतिशत हिस्सा सिंचित है, 21 प्रतिशत असिंचित और शेष 70 प्रतिशत अरावली पर्वत श्रृंखलाओं का है, इतनी कम सिंचित भूमि होने के बाद भी यहाँ पर लगातार पानी का स्तर गिरता जा रहा था। यहाँ के युवक रोजी-रोटी की तलाश में दिल्ली और अहमदाबाद चले गये थे, पीने का पानी भी उपलब्ध नहीं था, बूढ़े बच्चे और महिलाएं कुपोषित हो चुके थे, महिलाओं का अधिकतर समय पानी की व्यवस्था करने में ही गुजरता था।

उक्त सवालों को समझने हेतु ही संघ के कार्यकर्ताओं ने यहाँ काम शुरू किया। गाँव वालों से पूछताछ की तो बुजूर्गों ने बताया, कि वर्षा के पानी को रोकने के लिए छोटे-2 जोहड़ बना लिये जाते थे, उनसे कुओं का जल स्तर नहीं गिरता था, इन जोहड़ो को स्थानीय ग्रामीण ही बनाया करते थे, वे ही पानी का वितरण करते थे, तथा मरम्मत आदि का कार्य भी उन्हीं लोगों के हाथ में होता था।

परन्तु पिछले 100 वर्षों से इस प्रकार के बाँध बनाने की परम्परा समाप्त हो गई है, जो पुराने थे, वे टूट गये या भर गये, क्योंकि अब न पहाड़ियों पर पेड़ रहे है, न नियमित वर्षा होती है, वर्षा होती भी है तो पानी तेज गति से आता है, जो अपने साथ भारी मात्रा में कंकड़ आदि लाता है। इस मिट्टी से सभी पुराने बाँध भर गये, अब पानी रोकने के लिए कोई स्थान नहीं बचा, इसलिए भूमि पुनः सिंचित नहीं होती और पहले से जमा जल धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है, जिससे कुऐ सूख गये हैं।

अकाल से पूर्व भी यहाँ कुल 30% भूमि पर खेती होती है, जिसमें 21% असिंचित 9 सिचिंत भूमि है, शेष पहाड़ियां व ढालने हैं जो कि गोचर व जगल क्षेत्र के रूप में गाँव की सामलात देह है। यह सामलात देह भी लगभग समाप्त हो गई हैं।

संघ के सदस्यों ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर सामलातदेह (जोहड़ गोचर) सुधारने के लिए काम करने की सोची ग्रामवासियों से आग्रह किया गया, कि बनाने का स्थान चुना जाये, परंतु इस बीच कुछ ग्रामवासियों ने कहा कि यदि आप ही जोहड़ बना कर दे, तो सहुलियत रहेगी। संघ ने काम चालू किया, गाँव का सहयोग पूरा नहीं मिलने पर भी काम चलता रहा। उसके बाद गाँव के साड़ियास नामक स्थान पर वनीकरण किया गया था, जिसे "कांवड बनी" या "साडियास का जंगल" कहते है। कांवड़ पर बने साडियास देवता को ही इस जंगल के संरक्षण हेतु जुम्मेदार मानते है। इसकी ये सामूहिक रूप से अथवा व्यक्तिगत रूप से पूजा भी करते है। बासेड़ा के दिन गाँव के लोग-लुगाई मिलकर पूजा करने जाते है। कांकड़ के देवता में आस्था होने के कारण सौ वर्ष पूर्व तक कोई भी उस बनी से पेड़ नहीं काटता था। किन्तु ज्यों-ज्यों अपनी परम्पराओं में आस्था कम होती गई तो कांकड़ बनी समाप्त हो गई। यहाँ अब पुनः यह परम्परा आरम्भ हुई है। गाँव के लोगों ने यहाँ पर पुनः जंगल लगाने का काम 1986 से आरम्भ किया है, लेकिन यह प्रशासन को बाद में नहीं सुहाया।

इस गाँव में जो जोहड़ बना था उससे क्षेत्र में भी विश्वास जमने लगा था। लोग समझ गये थे कि लोग मिलकर ही संस्था का सहयोग प्राप्त कर सकते है। उस समय भंयकर अकाल था, क्षेत्र से पलायन करते लोग-लुगाई त्राही-त्राही कर रहे थे। ऐसे समय में एक टेम की रोटी का सहारा मिलना बड़ी बात थी, यह संस्था एक टेम की रोटी जैसी बन गई भी। संस्था श्रमदान की बात करती है, इसका अर्थ यह है कि लोग काम करे तो काम करते समय के खाने की व्यवस्था होगी, बाद में जोहड़ के प्रत्यक्ष लाभ से भरपेट अन्न जल मिलेगा।

लोग अब संस्था में बराबर आने लग गये। धीरे-धीरे यह लगने लगा कि यह संस्था दाता नहीं है। सहभागी है। इसलिए यह उन्हें मिलाकर बराबर काम करती है। ऐसा काम जो हमारे अंगत चलाने के लिए जरूरी है। नेताओं को छोड़कर अब लोगों की राय में उनके दुःख में सहारा हो गई थी।

गाँव में संस्था को तथा संस्था में गाँव को पूरा विश्वास हो गया था, संस्था का मंत्री तो इतना उत्सा।हेत था, कि इस गाँव के संगठन को अब कोई नहीं तोड़ सकता ऐसा मान बैठा था। लेकिन कुछ दिन बाद मंत्री का यह भ्रम जिला प्रशासन व सरपंच ने मिलकर तोड़ दिया था। जिससे संस्था तथा गाँव दोनों को ही सीख मिल गई थी।

गाँव का संगठन टूटने के बाद पुनः लोग आपस में मिले तथा टूटे रिस्तों तथा जोहड़ों को पुनः ठीक किया। मिल बैठकर फिर अपने काम करने लग जाये इस भाव से इस गाँव के बुरे समय में लोगों का साथ देने के लिए श्री अनिल अग्रवाल, सुनीता नारायण, प्रभाष जोशी, चन्डी प्रसाद भट्ट, आदि ने बहुत कष्ट उठाकर, भाग दौड़ करक गाँव को संकट से बचा लिया। यह पूरा गाँव आज भी उनके नामों को याद रखे हुऐ है।

ग्रामसभा ने जल के साथ-साथ जंगल संरक्षण का काम भी आरम्भ किया तथा पाँच सौ एकड़ गोचर का विकास किया, इसमें से हरी लकड़ी काटना बन्द कर दिया तथा इस पर पशु दबाव भी कुछ कम किया जिसके कारण कुछ में आरम्भ हुआ यह प्रयास आज भी मनमोहक

लगता है। उन्होंने अपने बाँध-जोहड़ को स्थाई बनाये रखने हेतु उसके कैचमेन्ट को भी हरा-भरा करने का अभियान चलाया था। 300 बीमा क्षेत्र के चारों तरफ फैन्सिगं वाल करके इसे बन्द कर दिया था तथा इसमें पौधे व बीजरोपण का भी कार्य किया था। लेकिन 86 में आरम्भ हुऐ यह प्रयास 89 में जिला प्रशासन की हढ़धर्मी के कारण समाप्त हो गया। यहां पर पेड़ लगाने के लिए 4950 रु० का दण्ड किया तथा गाँव के संगठन को तोड़ दिया था। गोपाल पूरा के लोगों ने प्रायश्चित किया और तिलक के जन्म दिवस 1989 में पेड़ बचाना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" पदयात्रा का आयोजन किया। इन्होंने जंगल संरक्षण के लिए वने पुराने दस्तूरों का पालन करने हेतू कई बार अपने खिलाफ ही सत्याग्रह करके गांव को एक बार फिर जोड दिया। ऐसे भी कई मौके आये जब पूरा गाँव एक परिवार के मकान पर जाकर भूखा बैठा रहा।

इस गाँव में पेड़ काटने वाले ही अपने भाई को जात वहिष्कार तक किया। प्राकृतिक संसाधनों के विकास हेतु यहाँ ग्रामकोष का निर्माण किया है। यह ग्रामकोष ग्रामसभा ने अपने शरीर श्रम से बनाया है, इसके साथ-साथ अपने पशुधन व खेती की पैदावार से भी ग्रामकोष एकत्र करते है। इन्होंने 4/ (चार रुपये) प्रत्येक भेड़-बकरी के हिसाब से ग्रामकोष के लिए कोष इक्ट्ठा किया है। यहाँ 300 भेड़-बकरी है, इससे 1200/- (बारह सौ रुपये) वार्षिक आय होती है। एक वर्ष में प्रत्येक परिवार से एक सदस्य लगभग 12 दिन श्रमदान करता है, इस प्रकार 57 × 12=684 मानव दिन श्रमदान प्रत्येक वर्ष हो जाता है। इस प्रकार 684 × 22= 15,048/- रुपये इस प्रकार गत पाँच वर्षों से 15,048 × 5=75,240/- रुपये का श्रमदान किया। अब तक तरुण भारत संघ की सहायता 3:1 थी अब 2:2 आधे काम की मदद तरुण भारत संध तथा आधा काम ग्राम सभा शरीर श्रम या ग्रामकोष से करती है।

अब इस ग्रामसभा के पास 25,000/- आवर्ती ग्रामकोष है तथा 3,00,960/- की सामलात देह इनके द्वारा अभी तैयार की गई है यह ग्राम पूंजी है। जो कि प्राकृतिक संसाधनों का संर्वद्धन करती है। इसके परिणाम ये है कि अब इस गाँव के युवाजनों को गाँव में ही काम उपलब्ध है। अब यहाँ के युवा मजदूरी के लिए बाहर नहीं जा रहे है। यहाँ गेहूँ, जो, चना, सरसों की बहुत अच्छी फसल के साथ-साथ मक्का भी बहुत अच्छी होती है। ये अब अपनी पैदावार से अपनी पूर्ति के बाद बड़ा हिस्सा दूसरे गाँवों को बेच देते है। अपने गोबर तथा कूड़ा-करकट से बनी सैन्द्रिय खाद का उपयोग करते है। इससे फसल में बीमारी नहीं लगती इसलिए विषैली दवाईयों ड़ालने की आवश्यकता नहीं होती। ये मीठा, नमक, मिट्टी तेल तथा कपड़ा के अलावा लगभग स्वावलम्बी है। अब इनका सिंचाई का पानी पर्याप्त है। पेयजल भी पूर्ण है। मिट्टी नहीं बह रही है। गोचर में नये-नये पौधें जन्म लेकर बढ़ रहे है, पनप रहे हजारों पेड़ पड़ौसी गांवों का आवाहन करते हैं कि वे अपने गाँव को ऐसा ही हरा-भरा बनाये। अब यहाँ के सब छोटे बच्चे पढ़ रहे है। महिलाओं मे भी जागरूकता है। यहाँ अब लड़कियाँ भी स्कूल जाती है। कोई बीमार हो जाये तो अपनी देशी दवाई से काम चलाते है, उसके बाद तरूण भारत संघ के चिकित्सालय जाकर चिकित्सा प्राप्त करते है। आर्थिक सहायता के लिए बोहरा के पास भागने की जरूरत नहीं होती। बल्कि इनका ग्राम कोष ही इनके अधिकतर काम बिना ब्याज के चलाता है।

अब ईन्धन के लिए उन्हें पेड़ काटने की आवश्यकता नहीं रहेगी, क्योंकि ईंधन के लिए अपनी फसल में ईंधन देने वाली ढ़ेचा व अरहर (थोर) को शामिल कर लिया है इस प्रकार ईंधन के लिए महिलाओं की ऊर्जा व समय की बचत होगी इस प्रकार पर्यावरण सन्तुलन की दिशा में एक ठोस कदम बढ़ा है।

इस गाँव में जोहड़ बनने के साथ-साथ समाज को बेहतर बनाने के बहुत काम हुए है। इस प्रकार हम कह सकते है कि गोपालपुरा में जोहड़ बनाने का शुद्ध रचनात्मक काम सत्य के लिए आग्रह रखने पर संघर्ष को बुलाता रहा, तथा सहज रूप से उसे प्रेम में भी बदलता रहा है। जिस सिंचाई विभाग ने गोपालपुरा गाँव के जोहड़ को तोड़ने का नोटिस दिया था, आज उसी विभाग के इन्जिनियर तरूण आश्रम, आकर बातचीत करने लगे है। ये ही जोहड़ बनाने के काम की महिमा करते है। जोहड़ जो सरकारी लोगों को रास नहीं आते थे। अब उन्हें इसका महत्त्व स्पष्ट दिखने लगा है।

जोहड़ों के अनुभवों का दूसरा वर्ष :

पहले वर्ष के अनुभव और प्रत्यक्ष लाभ को देखकर लोग काफी उत्साहित हुऐ और फिर लोगों को जोहड़ बनाने हेतु साधन प्राप्त करने की जरूरत महसूस होने लगी। लोगों ने स्वयं संस्था से मिलकर अपने-अपने गाँव में जोहड़ बनाने का निर्णय किया। संस्था ने जोहड़ निर्माण हेतु आवश्यक साधन जुटाने के लिए कई बड़े पैसे वाली संस्थाओं से सम्पर्क किया, उन्हें अपना काम एवम् विचार समझाया। उसके बाद क्षेत्र में 30 जनवरी से 12 फरवरी 1987 तक पुनः एक दूसरी पदयात्रा का आयोजन किया इसमें गत वर्ष देखे गए स्थानों पर जरूरत के अनुसार गाँव में ही लोगों के साथ बैठकर साधन जुटाने एवम् ग्राम के श्रमदान सहयोग का निर्णय करके अपनी समझ के लिए एक योजना तैयार की इसके बाद आक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट की सहायता प्राप्त करने के लिए उसे अपनी जरूरत क्षमता बताकर उससे आर्थिक सहायता प्राप्त कर ली।

इस प्रकार साधन मिलने के बाद पुनः गाँव में जाकर लोगों के साथ फिर बातचीन की इस बार गाँव के साथ मिलकर नये जोहड़ों के लिए जगह का चुनाव तथा पुराने जोहड़ों को गहरा करने का काम चालू हुआ। नई जगह के चुनाव करते समय कई बातों का ध्यान रखकर चुनाव होता था, लोगों के पशु जिस तरफ चरने के लिए जाते थे उधर ही गाँव वाले प्रायः जोहड़ का स्थान तय करते थे, इस बात का ये लोग अवश्य ही ध्यान रखते थे, कि वह स्थान अन्य स्थानों की अपेक्षा नीचे हो। यहाँ की मिट्टी थोड़ी चिकनी हो, तथा खाकरे की कंकरीली, जमीन नहीं हो तो अच्छा होता है, वैसे ऐसी जगह नहीं मिलती थी, तो लोग ढ़ालू पहाड़ी के नीचे जिधर ग्रामवासी शौचादि के लिए नहीं जाते उधर कोई भी जगह तय करके जोहड़ बना लेते।

दूसरे वर्ष में भी अकाल था, इसलिए लोग बाहर जा रहे थे, लेकिन फरवरी मार्च में बाहर गये लोग एक बार वापस आते है। इसलिए मार्च में जब लोग यहाँ आये तो एक बार फिर लोगों ने जोहड़ के काम की जरूरत महसूस की, संस्था को भी सहायता मिलने की आशा हो गई थी। इसलिए जहाँ जहाँ तैयारी हुई, काम चालू हो गये।

बाछड़ी गाँव में पेमाराम मेवाल ने इस कार्य में बहुत रूची ली। इन्होंने अपने गाँव में पीपल वाला जोहड़ बीच वाला जोहड़, जंगल वाली जोहड़ी, तथा बीजा की ढ़ाह वाला जोहड़, बनाने के लिए लोगों को तैयार किया। भाल गाँव में ब्रजमोहन गुर्जर नामक युवक ने बहुत रूची ली तथा अपने गाँव का एक संगठन बनाकर गाँव में जोहड़ का निर्माण किया, इस छोटे से गाँव में भी आपसी फूट थी, लेकिन यहाँ पर संस्था के विद्यालय के कारण एवत् सतत बैठकों से यहाँ काफी बदलाव आया तथा यहाँ पर हनुमान व ब्रजमोहन ने सारे गाँव का एक बार फिर संगठन बना लिया तथा जोहड़ में आधा श्रमदान करके जोहड़ का निर्माण कर लिया। वैसे यहाँ के गुर्जरों के बारे में कहावत है, "रात को बैठे एक मत सुबह होई तो सौ मत" यह वास्तविकता होते हुए भी इस गाँव में छोटा सा जोहड़ बनाना बड़ा चमत्कार था, यह इसलिए भी सम्भव हुआ कि यहाँ के लोग आसपास में जोहड़ बनते देख कर ये भी अपने गाँव में जोहड़ बनाने के लिए तरस रहे थे। इनको बहुत जरूरत भी थी, यहाँ के कुओं में पीने का पानी तक नहीं था। इस जोहड़ का सीधा लाभ इन्हें दीखता था।

काला लांका में जगदीश पटवारी, गोपालशर्मा तथा मीणों ने काफी उत्साह दिखाया और इन सबने मिलकर अपने गाँव में कई पुराने जोहड़ों की मरम्मत करने का एक अभियान जैसा चला दिया, इसीलिए थोड़े से समय में ही पीपल वाली जोहड़ी उड़द वाली जोहड़; गाँव वाली जोहड़ी, को ठीक से गहहरा करने में बहुत ही श्रमदान किया तथा बीजा की ढाहई को बनाने में भी ये सब सहयोगी रहे।

सोती का गुवाड़ा तथा फकालों ने भी खूब काम किया। नये जोहड़ों के निर्माण में ग्रामवासियों का उत्साह सराहनीय था, सोती के गुवाड़ा में जोहड़ बनाने में व्यास के गुवाडा के लोगों ने बहुत मेहनत की। गोर्वधन शर्मा ने इस जोहड़ के लिए आसपास के गुवाडों को तैयार किया। राम जी का गुवाड़ा से भी इस जोहड़ में काम कने के लिए लोग आये। पहाड़ के नीचे के गाँव के पशुओं को पानी पीने के लिए यह एक छोटा सा सुन्दर जोहड़ तैयार हो गया था। इस जोहड़ की पुरी योजना गाँव वालों ने बनाई थी, उन्होंने ही इसका संचालन किया था।

गु० कालोत में विधवा महिला जम्बूरी ने अपने पुरे गाँव के हिस्से का श्रमदान अकेले ही किया था। इसने कहा कि मैं अपने शरीर की मेहनत से इतना तो कमा कर जाऊ जिससे आगे जाते ही मुझे पानी मिले। इसने साठ दिन अकेले ने काम किया जिसका किसी से भी एक पैसा नहीं लिया। इसके मेहनत की चर्चा चारों तरफ फैली तथा जब महिलाओं ने जम्बूरी की कहानी सुनी तो अन्य महिलायें भी ब़ढ़-बढ़कर जोहड़ बनाने के काम में लग गई।

देवरी गाँव में सम्पत्ति देवी के उत्साह के कारण पशुओं के पीने के लिए एक जोहड़ निर्माण हुआ जिसमें अब वर्ष भर पानी रहता है, इस जोहड़ के कारण ही एक कुंऐ का पीने का पानी भी हो गया है, लेकिन इस गाँव में इस प्रकार के प्रत्यक्ष लाभ देखकर भी नये जोहड़ नहीं बनाये गये। लोगों का पशुपालन ही मुख्य धन्धा है। इसलिए खेती के लाभ के लिए अन्य नये जोहड़ बनाने के प्रयास यहाँ के लोगों ने नहीं किये। यहाँ का ग्राम संगठन जंगल बचाने के लिए पूरी सरिस्का में सबसे आगे हो गया था। अब यहाँ भी जोहड़ बन रहा है।

किशोरी गाँव में पाँचू मीणा ने अपनी ढ़ाणी के अन्य परिवारों को संगठित किया जिनमें से रामपाल, श्री किशन, कन्हैया, बुद्धा, देबीसाहय के पिता छोटेलाल मीणा ने मेहनत करके अपना बाँध बनाया, इन्होंने लाखों रुपये का काम अपने आप मिलकर किया था। इस लाखों रुपये में संस्था ने केवल 32,460/-बत्तीस हजार चार सौ साठ रुपये का कुल सहयोग कारीगर की मजदूरी एवम् पाल पर मिट्टी डालने वाले बाहर के लोगों की मजदूरी के रूप में दिये। इस बाँध के निर्माण से लगभग 150 बीघा जमीन सुधर गई जिसमें खेती नहीं होती थी, लेकिन बन्धा बनाने से पानी रूकने लगा, तथा जमीन में जो बड़े-बड़े नाले बन गये थे, वे ठीक होने लगे, नीचे की तरफ भूमि का कटाव रूक गया। इसके नीचे की तरफ 20 कुओं में पानी बढ़ने लगा। जिन पाँच परिवारों ने मेहनत करके इस बाँध को बनाया था, वे पहले वर्ष में लागत से अधिक चने व सरसों की फसल प्राप्त कर खुशी के मारे फूले नहीं समाये। सबसे पहले फसल में से चनों का एक गट्ठन आश्रम को भेंट किया। तरूण भारत संघ के कार्यकर्ता भी उस चने के गट्ठन को देखकर धन्य हो गये, तथा सोचने लगे हम तो बड़े भाग्यवान हैं कि हम ऐसे सद् प्रयासों से लोगों के साथ जुड़े है। जिससे खाने के लिए अन्न तथा पीने के लिए पानी जैसी जरूरी सामग्री पैदा होती है। दूसरे वर्ष में इस प्रकार भी कई गाँवों में काम सम्पन्न हुऐ थे। जिनमें मांडल वास मुख्य है।

माण्डलवास गाँव में जोहड़ बनाने का अनुभव :

दूसरा वर्ष संघ के लिए मधुर अनुभवों का था जिनमें मांडलवास गाँव मुख्य था, यह गाँव गोपालपुरा गाँव के पास का गाँव था, यहाँ के लोग गोपालपुरा में होकर ही निकलते हैं। इसलिए गोपालपुरा का सबसे अधिक प्रभाव इस गाँव पर पड़ा तथा यहाँ के लोगों ने उसी वर्ष काम के दौरान मन बना लिया था, कि गोपालपुरा से अधिक काम ये अपने गाँव में करेगें। इस गाँव में सरकार का कोई आदमी व विकास का कोई काम नहीं पहुंचा था। इसलिए गोपालपुरा के काम यहाँ के लिये आश्चर्य तथा उत्साह वर्धक थे। इसलिए इन्होंने बार-बार संघ कार्यकर्ता से अपने गाँव में काम करने की बात कहीं, यह दूसरी तहसील का है तथा बहुत बड़े पहाड़ के दूसरी तरफ होने के बाबजूद दूसरे वर्ष में लोगों के आग्रह पर हम इस गाँव पहुँचे।

इस गाँव में जाकर देखा व्यक्ति को आरम्भ में जो सुख का आनन्द प्राप्त था, वह यहाँ अब भी शेष है ऐसा आभास हुआ। यहाँ का आपसी प्रेम देखने व समझने को मिला, लेकिन जैसे-जैसे व्यक्ति की चाह, मोह, भविष्य की चिन्ता, अविश्वास बढ़ता गया, वैसे-वैसे ही यहां का व्यक्ति भी प्रकृति एवं आनन्द से दूर हटता चला गया। वैसे अब भी गाँव के लोगों को वह ही सुख व आनन्द प्राप्त होता है, जो भारत के गाँवों को पाँचों सौ वर्ष पूर्व प्राप्त था।

माण्डलवास गाँव वन्य जीव अभयारण्य सरिस्का की बफर जोन में स्थित है। मीणा जाति आज कल की भाषा में पूर्ण रूपेण अनसूचित जन जाति के 75 परिवार का गाँव है। यहाँ के लोग स्वभाव से सहज, सरल, हैं। ये अपने दूध पीने के लिए पशु पालते है। तथा भोजन के लिए खेती करते है। पशुपालन में अधिक दूध देने वाले (संकर नस्ल) के पशुओं का मोह नहीं

खेती में अधिक कमाने के लिए रसायनिक खाद डालने का लालच अभी भी नहीं आया है। शोक नहीं, संताप नहीं, बल्कि भगवान के प्रति विश्वास है।

आपसे में कभी लड़ाई-झगड़ा हो जाये तो भ्रम नहीं, रोष नहीं, ईर्ष्या नहीं, धोखे की चिन्ता नहीं बल्कि मिल बैठकर झगड़े सुलझाने की परम्परा वहीं पहले जैसी है। इसलिए अभी यहाँ विश्वास तथा प्रेम की गंगा जीवित है। धीरे-धीरे बहती रहती है।

किसी के पास कभी खाने के लिए अन्न पैदा नहीं हुआ तो यह गाँव का गरीब नहीं हो जाता था। और उसके खाने-पीने की कमी तभी हो सकती है जब सारे गाँव में कमी आ जाये, क्योंकि सब ध्यान रखते है। खाने की पूरी व्यवस्था करते है उसे पहले जैसा बराबर का सम्मान भी देते है।

गाँव में कोई खेती करता है, कोई पशु पालता है, किसी के हिस्से में गोबर इक्ट्ठा करने का काम आता है तो किसी के हिस्से में हल चलाने का काम आता है। तो कोई केवल खेत में रोटी पहुँचाने का ही काम करता है, इनमें काम के आधार पर कभी ऊँच-नीच का भाव नहीं देखा गया, गाँव की सफाई करने वाला कालू भी गाँव के निर्णय में बराबर भागीदार रहता है। यह यहाँ का अछूत नहीं है। सबके साथ बैठता है। इसे भी बराबर सम्मान मिलता है, इसके साथ ऊँच-नीच या मालिक-गुलाम का रिस्ता नहीं है।

यहाँ बिजली या केरोसीन की लालटेन का प्रकाश नहीं है, बल्कि आस्था व विश्वास का मन में प्रकाश है, जिसके प्रकाश में सब निर्भय होकर रात-दिन जंगल (जिसमें शेर से लेकर सॉप तक सभी जानवर विद्यमान है) मे घूमते रहते है। उनसे भी अन्धेरे में धोखा होने का भय नहीं, बल्कि उनको भी अपने जैसा मानकर उनसे भी पूर्ण लगाव है। इस प्रकार सुख से जीने वाले माण्डलवास के निवासियों को आज पिछड़े असभ्य कहकर तथा कथित विकसित लोगों ने इनके साथ शादी-विवाह के रिश्ते बन्द कर दिये है। अब यहाँ अच्छे जवान लड़के-कुआँरे रह जाते है, लेकिन फिर भी उन्हें कोई संताप नहीं है। किसी भी प्रकार का व्याभिचार नहीं है। अभी तक यहाँ सरकार की विकास की कोई योजना नहीं पहुंची है। इसका इन्हें बहुत मलाल नहीं।

इन्होंने पास के गाँव गोपालपुरा में "तरूण भारत संघ" द्वारा वनाये जोहड़ को देखकर अपने गाँव में भी जल प्रबन्ध "जोहड़ बनाने" का काम चालू कर दिया है। गाँव के दक्षिण में जिधर से गाँव की सारी खेती को नुकसान पहुँचाने वाला पानी आता था, उधर से सारे गाँव ने मिलकर पानी को रोकना आरम्भ किया। सबसे पहले धान का वाला जोहड़ बनाया इस को बनाने से ही कुँओं में पानी होने लगा। फिर उसके बाद दूसरे पहाड़ के नीचे दूसरा सरसा वाला जोहड़ बनाया। उसके बाद गाँव के पश्चिम में पहाड़ का पानी रोकने के लिए बहुत गहरा जोंहड़ बनाया जिसमें अब पूरे वर्ष पानी भरा रहता है। उसके बाद पूर्व के पहाड़ की तरफ एक छोटी जोहड़ी बनाई। इस प्रकार गाँव के चारों ओर से बहकर जाने वाले पानी को गाँव में ही रोकने का सफल प्रयास किया है, जिससे यहाँ अब बहुत अन्न पैदा होने लगा है, पशुओं के लिए घास की बहुतायत हो गई है। इस सबका इन्हें घमण्ड नहीं हुआ है, लेकिन इनका अपना खोया हुआ आत्म विश्वास इनमें वापस लौट आया है। अव ये इतना अवश्य सोचने लगे है, कि सरकार, संस्था, नेता कोई भी नहीं हो तो भी ये अपना काम स्वयं कर लेगें।

मिट्टी व पानी के संरक्षण के साथ-साथ जंगल बचाने का बड़ा भारी काम इन लोगों ने किया है। इनको सैकड़ों वर्ष पुराने दस्तूर पुनः याद आ गये है तथा ये उनका अब सक्रियता से पालन भी करने लगे है।

(1) जंगली जानवर सबके है, इन पर कोई पाबन्दी नहीं है। वे हमारे पालतू पशुओं को भी खा जाये तो इन्हें कोई मारे नहीं। लेकिन बाहर के पालतू पशु यहाँ आकर नुकसान नहीं कर सके उन्हें ये मिल जुलकर रोकते है।

(2) जंगल में कोई टॉचा-कुल्हाड़ी लेकर नहीं जायेगा तथा कोई भी हरे पेड़ों को किसी प्रकार हानि नहीं पहुंचायेगा।

(3) जंगल से कच्ची घास नहीं काटी जायेगी। दीपावली के बाद ही घास काटने व इक्ट्ठा करना शुरू करेंगे।

(4) वन्य जीवों को किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं पहुँचाया जायेगा। यदि उन्हें बाहर का आदमी कोई हानि पहुँचाने का प्रयास करे तो उसे पकड़कर पूरे ग्राम को इक्ट्ठा करके उस को सौंप देते है। ऐसा करने वाले को सम्मानित करने का भी प्रावधान है।

(5) गाँव में प्रत्येक व्यक्ति एक-एक पेड़ लगाकर उसको पाल पोसकर बड़ा करेगा।

उक्त सारे दूस्तरों के पालन में कभी कोई गतिरोध पैदा हो जाता है तो फिर पुनः लोग ही सुधार करते है। कुछ बार गड़बड़ पैदा करने की कोशिश की गई तो उसके ख़िलाफ सत्याग्रह किया गया था। यह ग्रामसभा आसपास के 5 गाँवों में सक्रिय होकर उक्त नियमों का पालन कराने के लिए चेतना का काम कर रही है। इन्हें जंगल के पेड़-पौधे, घास-फूंस तथा पालतू पशुओं का अच्छा ज्ञान है। जंगली जानवरों के रहन-सहन आदि की अच्छी समझ है। इन्होंने मुख्यतः राजोर, कासंला, मथुरावट, कान्यास, कराट, पीलापानी, किला नीचे, काली खेत, खान्याली, गढ़ दबकन, गाँव में भी जोहड़ बनाने की चेतना का काम किया है, इन गाँवों में भी लोगों ने अपनी तरह से काम करने हेतु अन्य लोगों को तैयार किया है। इस ग्रामसभा ने राजगढ़ तहसील के 23 गाँवों में पेड़ बचाओ पेड़ लगाओ पदयात्रा की है, हजारों पेड़ लगवाये है।

इस गाँव का कोई भी मुकदमा अदालत में नहीं है। ये रसायकि खाद व कीटनाशक दवाईयों का उपयोग नहीं करते है। इस गाँव में सदियों से लगते आ रहे मेले के दिन लोग पेड़ लगाते है। इस वर्ष लगने वाले मेले पर सभी ग्रामवासियों ने दिल खोलकर खुशी-खुशी पेड़ लगाये है। जिसका पेड़ अच्छा होगा उसे गाँव वाले अगले वर्ष सम्मिनित करेंगे।

गाँव में चार जोहड़ बन जाने से अब पुनः इनके लड़को की शादी होने लगेगी। अब आसपास के गाँव में इनका सम्मान होने लगा है। अब पास-पड़ौस के लोग इस गाँव को "येई" कहने लगे है। येई का अर्थ अनाज रखने की कोठी है। जोहड़ गाँव को येई बना देता है।

तीसरा वर्ष 1988-89

दूसरे वर्ष के अनुभव, उत्साह वर्धक थे, इस सारे काम की चर्चा चारों तरफ फैल गई थी। लोगों की ताकत प्रतिष्ठित हो रही थी। जिला प्रशासन द्वारा जोहड़ तोड़ने के नोटिस के बाद भी जोहड़ों का नहीं टूटना तथा राजीव गाँधी मंत्रीमण्डल की सरिस्का बैठक में ग्रामीणों द्वारा दिये गये ज्ञापन की सफलता तत्कालीन जिला धीश की आँख की किरकरी थी। वे किरकरी बन गई संस्था का सफाया करने की ठाने बैठे थे। जिलाधीश जब कुछ नहीं कर सके तो गोपालपुरा गाँव में जोहड़ों के जल दाता क्षेत्र (आगोर) में वृक्षारोपण किये क्षेत्र में बन्धुआ मजदूर बसाने की योजना बना ली। इस सारे काम में जिला प्रशासन ने राज नेताओं, तथा देश के एक जाने माने अंग्रेजी अखबार नवीस का भी सहरा लेकर पेड़ कटवा कर बाहर से लाकर छः परिवार यहाँ बसा दिये। जिससे हमारे बहुत गहरे काम की चूले भी हिल सी गई। गाँव का संगठन टूट गया। स्थानीय सरपंच आदि सब जिला प्रशासन के पाले में जाकर खड़े हो गये। इस विवाद की चर्चा चारों तरफ बड़े नियोजित ढंग से फैलाई गई। अन्त में पेड़ों के हमदर्द श्री चन्डी प्रसाद भट्ट, गाँव के लोगों को सलाह देने के लिए श्री अनिल अग्रवाल, सुनीता नारायण, प्रभाष जोशी, आदि ने मिलकर इस पूरे प्रकरण को हल किया था। लोगों के अपने काम को सहारा दिया। इनके इस सद् प्रयास से तरूण भारत संघ पुनः अपने पैरों पर खड़ा होने का रास्ता खोज पाया।

लेकिन इस घटना का संघ के काम पर बुरा प्रभाव पड़ा जिस कारण इस वर्ष जोहड़ का कार्य अधिक नहीं बढ़ सका। उक्त चारों लोगों की प्रेरणा से गोपालपुरा प्रकरण की वास्तविकता बताने हेतु एक अगस्त 1989 में (तिलक के जन्म दिन) पर "पेड़ लगाना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" का नारा देकर पेड़ लगाओ पदयात्रा आरम्भ करके क्षेत्र के दो सौ गाँवों में रक्षा बन्धन के दिन 17 अगस्त को पेड़ों के राखी बाँध कर पदयात्रा का समापन किया। इस पदयात्रा में प्रभाष जोशी, श्री सिद्धराज ढ्ड्ढा भी अलग-अलग दिन भागीदार रहे।

पेड़ लगाने के साथ-साथ जोहड़ निर्माण के काम को पुनः तेज किया गया। इन दिनों में जोहड़ बनाने की तैयारी व जगह का निर्धारण किया गया। लेकिन इन दिनों में जोहड़ बनाने का काम नहीं होता।

गोपालपुरा माण्डलवास के उदाहरण खेती का काम करने वाली मीणों के लिए काफी थे, इसलिए अंगारी भूरियावास भी उदाहरण बन गये।

अंगारी के जोहड़ का अनुभव

अरावली पर्वत की उत्तरी पूर्वी श्रृंखलाओं में अलवर जिले की थानागाजी तहसील में स्थित "अंगारी" गाँव के निवासियों ने मिलकर तरूण भारत संघ की प्रेरणा से यहाँ एक जोहड़ 1988 में बनाया था। यह संघ के काम का तीसरा वर्ष था, यहाँ के श्री राम निवास मीणा की गोपालपुरा में रिश्तेदारी थी, वे यहाँ आते-जाते थे, यहाँ का काम देखकर अपने गाँव में भी इसी प्रकर एक जोहड़ बनाने का तय किया और अपने खेतों पर मिलकर जोहड़ बना लिया था।

इस गाँव का कुल क्षेत्रफल 1163 हेक्टयर है, जिसमें 95 हेक्टयर भूमि पर सिंचाई होती

है। 336 हेक्टयर असिंचित खेती होती है। शेष 732 हेक्टयर भूमि पर पहाड़ी श्रृंखलाये है। इस क्षेत्र में खेती नहीं हो सकती है। इस पूरे पहाड़ी क्षेत्र का पानी दो हिस्सों में बंट जाता है। एक हिस्से के पानी को गाँव वालों ने मिलकर रोकने के लिए जोहड़ बनाने का तय किया था। उसकी साईड भी ग्रामवासियों ने ही चुनी थी, इसके निर्माण के लिए तरूण भारत संघ ने कुछ आंशिक आर्थिक सहयोग कराने की व्यवस्था करने की जुम्मेवारी ली थी। इस में जिनके खेत थे, उनसे मिलकर श्रमदान किया। इसके निर्माण में कुल 2769 मानव दिन रोजगार मिला। 65 वर्ग फिट प्रति मानव दिवस मिट्टी का काम हुआ जिसके 15/- (पन्द्रह रुपये) की दर से 41,535/ (इक्तालीस हजार पाँच सौ पैतीस रुपये) मात्र का कुल काम हुआ। जिसमें से कुल 11,055/- (ग्यारह हजार पैसठ रुपये) की मजदूरी का भुगतान निहायत गरीब मजदूरों को ही किया गया। इन मजदूरों का इस बन्धें की मूल मल्कियत में हिस्सा नहीं था, इसलिए उन्हें इनके परिश्रम का पारितोषिक नकद दिया गया। इनके पास अन्य कोई भोजन का आधार नहीं था। इसलिए भी इन्हें भुकतान किया गया था। शेष कार्य श्रमदान के रूप में उन ग्रामवासियों ने किया जिनकी इस में जमीन है। इसमें तरूण भारत संघ के कार्यकर्ताओं ने भी श्रमदान किया। फलस्वरूप लगभग 900 फिट लम्बाई 10 फिट गहराई वाला मिट्टी का यह जोहड़ बनकर तैयार हो गया।

जुलाई 88 की वर्षा से यह जोहड़ पूरा भर गया। इसका लगभग 7 हेक्टयर भराव क्षेत्र है, जिसमें पानी फैल गया था। यह सारा पानी अक्टूबर अन्त तक खाली हो गया, और इस सारी भूमि में गेहूँ बो दिये गये। इसमें बिना किसी प्रकार का खाद डाले ही बहुत अच्छी गेहूँ की फसल पैदा हुई।

नीचे की तरफ के सात कुओं में जल स्तर ऊपर आ गया है, जिनमें से कुछ कुए तो ऐसे हो गये है, कि उनका पानी नहीं टूटता है। इस प्रकार कुओं के द्वारा लगभग 23 हेक्टयर क्षेत्रफल कुओं से दो बार व तीन बार सिंचित होने लगा। ये वे कुऐ थे, जिनका जल बहुत कम हो गया था या बिल्कुल सूख गया था।

इस जोहड़ के निर्माण से लगभग 50 हेक्टयर भूमि का कटाव (इरोजन) व जमाव (सिल्टिंग) रूक गया है। पानी के साथ इस गाँव की लगभग 150 हेक्टयर भूमि का उपजाउपन बहकर बाहर जाने से रूक गया। इस गाँव की ऊपजाउ मिट्टी जो कि इस गाँव की पूंजी है, प्रतिवर्ष बह जाती थी। इसकी हानि का ठीक हिसाब रखना ही कठिन हैं, तथा यह क्षतिपूर्ति सम्भव भी नहीं है। इस बांध के कैचमैन्ट में नंगी पहाड़ियां होने के कारण अब तेज बरसात में मिट्टी का कटाव अधिक होने लगा है। जिस मिट्टी की ऊपजाऊ पर्त को बनने में कई सौ वर्ष लगे थे, वह अब जन दबाव, अनियमित वर्षा, वृक्ष विहिन ढ़ाल, पहाड़ियों पर पानी के वेग के कारण बहकर चली जाती थी। पर वह बिगाड़ रूक गया है। इस बन्धें से दो सौ हेक्टयर भूमि में नमी बनी रहेगी। जहाँ नमी है, वहाँ पर घास अधिक जम रही है, किंकर, रोज, पापड़ा, नीम, पीपल, आदि के वृक्ष स्वत: जमने लगे है। जिससे आसपास की परिस्थितिकी का विकास हो रहा है। जंगली जानवरों, तथा पालतू पशुओं को बारह माह पीने का पानी मिल रहा है। आसपास के वृक्षों पर पक्षी अपने घोंसले बना रहे है।

इस जोहड़ के निर्माण के फलस्वरूप लगभग 200 (दो सौ क्विण्टल) अनाज अतिरिक्त पैदा होने लगा है। पशुओं के लिए चारा मिलने लगा है।

इस गाँव के श्री रामनिवास मीणा जिनके नेतृत्व में यह कार्य सम्पन्न हुआ, उनके खेत भी इस बांध से लाभान्वित हुए हैं। उनका कहना है, कि यदि यह जोहड़ नहीं बनता तो हम 17 परिवार तो उस अकाल में गाँव छोड़कर वाहर चले जाते। हमारा कोई "धणी थोरी" नहीं था। हमारा तो मालिक यह जोहड़ ही है।

इस गाँव का प्रभाती कहता है, कि इस बाँध के कारण हमारी अव उसी जमीन पर तीन गुणी फसल पैदा होने लगती है।

छोटे बलाई का कहना है सरकार ने तो आज तक हमारा कोई काम नहीं किया, पर यह जोहड़ बन गया तो अब हम भी इस गाँव में रह जायेगें। नहीं तो दूसरों की तरह मकान बनाने के काम में दिल्ली जाना पड़ता है।

इस जोहड़ के बनने से लगभग 100 व्यक्तियों को अपनी ही उसी जमीन पर 90 दिन का अतिरिक्त रोजगार मिल गया है। जिसके कारण अब गाँव की पूंजी है। यह ऐसी पूंजी है, जो सतत भाई-चारे को बढ़ाती हुई सहकार को वास्तविक रूप से कायम रखती है। प्राकृतिक संसाधनों का विकास करती है। ऐसी यह पूंजी "छोटे जोहड़" जगह-जगह पर बनाकर सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव की प्रक्रिया तेज की हैं।

इस जोहड के बनाने में किसी डिग्री प्राप्त इन्जिनियर के मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं हुई। बस गाँव वालों को 5-7 बार मिलकर बैठना पड़ा था सब कुछ तय करने के लिए अब इस जोहड़ को देखकर आसपास के गाँव वाले, तथा इसी गाँव का शेष जल जो दूसरी साईड से वह जाता है उसे भी गाँव के लोग मिलकर आने वाले समय में एक जोहड़ बनाकर रोकने की तैयारी कर रहे है।

इस गाँव के काम को देखकर नांगलवनी, झाकडियाँ आदि आसपास के लोगों ने भी जोहड बनाने का काम आरम्भ किया है।

भूरियावास गाँव में जोहड़ बनाने की अनुभव

भूरियावास गाँव के आरम्भ में भाँवता वाला जोहड़ सुन्दरा गुर्जर के प्रयास से बनाया, वह व्यक्ति इस गाँव का सज्जन-सरल व्यक्ति था, इसने देव का देवरा तथा हमीरपुर साईड में बने जोहड़ों को देखकर अपने गाँव में जोहड़ बनाने का काम चालू करने का विचार किया था। तभी यह तरूण आश्रम में आया था। स्कूल के पास पूरे परिवार को तथा गाँव को लगाकर अपना जोहड़ बना लिया था। स्कूल के पास इस जोहड़ के बाद दो छोटे जोहड़ कोल्याला, भूरियावास स्कूल के पास में बने, जिसमें पूरे ग्राम ने श्रमदान किया था।

इस गाँव में सामलात देह संरक्षण के भाव प्रबल थे, इसलिए इन्होंने जोहड़ बनाने के साथ-साथ अपने जंगल बचाने के बहुत भारी प्रयास किये।

ग्राम भूरियावास अलवर जिले की थानागाजी पंचायत समिति के दक्षिण में स्थित है। यह गाँव अरावली पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ लम्बाई में 5 किमी० चौडाई में 2 किमी० है। गुर्जर, मीणा बलाई, बाहुल्य है। बनिया, राजपूत ब्राह्मण, कुम्हार, रैगर, कीर अन्य सभी जातियाँ को निवास देने वाला यह गाँव कुछ अर्थों में एक आदर्श गाँव है। ये सभी गाँववासी मिलकर सबके हित में सोचते है। कोई संकट का समय हो तो सब एक दूसरे की मदद करने के लिए तैयार रहते है।

यहाँ के ग्रामवासियों को अनेक बार जंगल का शोषण करने वाली ताकतों से कठिन संघर्ष करना पड़ा है। ये ताकत कुछ तो इनके अंदर गाँव में ही थी कुछ आस पड़ोस के गाँव से आकार पेड़ काटते थे। पड़ोसी गाँव सूरतगढ़, क्यारा, काबलीगढ़, बामनवास, डेरा, खरड़ाटा के बहुत ये पुशपालकों व लकड़ काटने वालो से बराबर युद्ध चलता रहता है। उन्हें समझाया भी है। कई मौके आये जबकि उक्त गाँव के लोगों के पेड़ काटने वाले हथियार इस ग्रामसभा ने छीन लिये तथा उन्हें पेड़ काटने से रोक दिया है।

ग्रामसभा के बहुत से लोग स्वेच्छा से पहरा देने के लिए जंगल क्षेत्र में तैनात रहे है। ये छोटे-मोटे संकट से तो स्वयं निबटते है। जब कोई बड़ा संगठित समूह इस जंगल को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करता है और ये उसे नहीं रोक पाते है तो फिर ग्रामसभा को सूचना देते है उसके बाद ग्राम सभा संगठित प्रयास करती है। अनेक अवसरों पर इन्होने घुमन्त पशुपालकों के बड़े-बड़े दलों से अहिंसक लड़ाई लड़कर जंगल को बचाया है। साथ ही साथ उन्हें जंगल तथा पशुओं के सम्बन्ध भी समझाये। तथा पेड़ों को बचाने का काम उनके ही लिए वैसे उपयोगी है इस पर भी चर्चा की।

"पेड़ बचाना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" का नारा इसी ग्रामसभा ने बुलन्द किया था, तथा वह पदयात्रा इसी गाँव से एक अगस्त 1989 को आरम्भ हुई थी। यहाँ पर बहुत से पेड़ लगाये है, सरकारी वृक्षारोपण में भी इन्होंने बहुत सहयोग किया है। तरूण भारत संघ द्वारा आयोजित पर्यावरण चेतना शिविरों, पदयात्राओं सम्मेलनों में बराबर भागीदार रहे।

आसपास के गाँव आगर, नांगल, अंगारी तक भी इस ग्रामसभा ने पेड़ बचाने के आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया है। यहाँ की ग्रामसभा के अध्यक्ष श्री सुन्दराजी का अधिकतर समय जंगल बचाने के काम में लगता है। इन्होंने सांवतसर, डूमोली, खरड़ाटा झरी आदि गावों में जंगल बचाने के लिए ग्राम सभाएं गठित की हैं। ये अब भी समय-समय पर इन ग्रामसभाओं को सम्भालते रहते हैं।

इस ग्रामसभा ने जंगल में अपराध करने वालों से आर्थिक दण्ड भी वसूल किया है इस प्रकार वसूल की गई राशि को भी इन्होंने साथ ही साथ जोहड़ निर्माण व वृक्षारोपण जैसे कामों में लगाया है।

इस ग्रामसभा ने दूसरे गाँव के लोगों को भी अपनी बैठकों में समय-समय पर बुलाकर सारे जंगल क्षेत्र को बचाने के संयुक्त प्रयास करने की शुरूआत की है।

यहाँ पर ग्रामसभा द्वारा चलने वाले विद्यालय में स्थानीय परिवेश का अध्ययन कराया जाता है जिसमें पेड़ों, पशुओं, जंगली जीवों के व्यवहार तक को सम्मिलित किया गया है यहाँ पर संख्या द्वारा चलाये जा रहे विद्यालय में पढ़ाने वाला भी स्थानीय व्यक्ति ही है।

बच्चों में पेड़ तथा जीव के प्रति प्रेम की भावना पैदा करने पर अधिक जोर दिया गया है। इस प्रकार पर्यावरण चेतना प्रसार की दृष्टि से यहाँ महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ है।

इस गाँव में पेयजल जागरूकता के साथ-साथ पारिस्थितिक विकास शिविर भी आयोजित हुए है। पर्यावरण चेतना प्रसार हेतु यहाँ पर महिला जागृति शिविर भी आयोजित किये गये है, जिसमें भोजन बनाने में काम आने वाले ईंधन की बचत करने का अधिक जोर दिया गया है। तथा ईंधन के लिए काम आने वाली लकड़ी अधिकतर फसल द्वारा पैदा करने का भी संकल्प इस गाँव ने लिया है। यहाँ पर गोबर गैस लगाने के प्रयास भी जारी है।

यहाँ का युवाजन पर्यावरण चेतना में बहुत आगे हैं। महिलायें इस दिशा में जागरूक-है तथा ये जंगल बचाने के लिए काम कर रही है। जिसके परिणाम स्वरूप इनके गाँव के चारों तरफ जंगल पुनः जीवित होने लगा है।

भूरियावास गाँव की समालात देह को बचाने-बढ़ाने में सुन्दरा, नाथू नारायण, गोपाल सिंह, घन्ना गुर्जर, ने बहुत ही मुस्तैदी से काम किया था। रूपा नामक महिला ने जोहड़ बनाने का काम बहुत प्रचारित किया जिससे आसपास में इस काम को बहुत बढ़ावा मिला।

चौथा वर्ष : 1989-90

चौथे वर्ष में तरूण भारत संघ को जोहड़ बनाने वाली संस्था के रूप में थानागाजी तहसील के अलावा राजगढ़ व उमरेण में भी बहुत जोर-शोर से निमंत्रण आने लगे थे। राजगढ़, तहसील के गाँव गुर्जरों की लोसल में बिना संघ से बात किये पहले अपनी पूरी तैयारी कर ली, उसके बाद संघ के कार्यकर्ता को बुलाकर जोहड़ बनाने के काम में कुछ सहयोग माँगा, कार्यकर्ता श्रवण शर्मा ने उस कार्य में तत्काल सहयोग करने की बात स्वीकार कर ली। बिना किसी मंत्री आदि से पूछे ही यहाँ का काम चालू हो गया, आधे से ज्यादा काम पूरा होने पर संस्था ने 25,000/- (पच्चीस हजार रुपये) की मामूली मदद की। जिसे लोगों ने आपस में बराबर बाँटकर जोहड़ का काम पूरा कर लिया।

गुजरों की लोसल के जोहड़ का अनुभव

यह गाँव 70 परिवारों की बस्ती है। इसमें पशुपालन व खेती का काम करने वाले गुर्जर जाति के लोग रहते है। यहाँ पर खेती का औसत एक एकड़ प्रति परिवार होगा। इस गाँव में कुल 22 कुंऐ है, लेकिन ये गत 7 वर्षो से सूखे पड़े थे, पीने के पानी का भी भयंकर संकट था, लेकिन ग्रामसभा ने सरकार पर काफी दबाव बनाकर एक हैण्ड पम्प तो लगवा लिया, लेकिन यह भी खराब ही पड़ा रहता था, यहाँ पीने के पानी की बहुत परेशानी होती थी।

अन्त में ग्रामवासियों ने निर्णय लिया और बिना किसी से बातचीत किये गाँव के ऊपर उत्तर (पहाड़) दिशा में एक बड़ा जोहड़ बनाने की ठान ली।

दीवाली के आसपास काम चालू किया। पचास-साठ ग्रामवासी नित्य काम पर जाते थे, फिर भी यह काम जेठ माह की पूर्णिमा तक चला। नौ माह के अथक (बिना रुके) काम करने के बाद जोहड़ तैयार हो गया। इस जोहड़ को देखकर जिले के सबसे बड़े इन्जिनियर ने कहा था "यह गाँव बह जायेगा" यह जोहड़ ठीक नहीं बना है। स्थानीय विधायक जी इस जोहड़ को दो बार देखने गये तो उन्होंने कहा "जोहड़ ठीक तरह नहीं बना है। गाँव बह सकता है" लेकिन गाँववासी अपनी धुन के पक्के थे, और अपने काम में आँख बन्द करके लग रहे।

जोहड़ पूरा होने के चार दिन बाद वर्षा बहुत जोरो से हुई। जोहड़ आधा भर गया। लेकिन उसका कुछ नहीं बिगड़ा। वर्षो के बाद आज भी वह अपनी शान से खड़ा है। इसके नीचे कुँओं में इस वर्ष जल स्तर बढ़ा है। इसके नीचे की तरफ मक्का की बहुत अच्छी फसल खड़ी है। लगता है अब इस गाँव के संकट के दिन बीत गये।

इस वर्ष ग्रामसभा की नियमित मासिक बैठक में ग्राम के आपसी मामलों पर बातचीत की जाती है। यहाँ आपसी लड़ाई झगड़े का कोई मुकद्दमा अदालत में नहीं है। यहां के लोग शराब नहीं पीते हैं हरे पेड़ों के संरक्षण के लिए इन्होंने कई गाँव से लड़ाई भी मोल ली है। अपने पेड़ों के संरक्षण का संकल्प वहाँ बिना बताए देखा जा सकता है।

सरकारी स्कूल वहां नहीं है। ग्रामसभा की तरफ से यहाँ एक शिशु पालना गृह एवं विद्यालय चलता है।

गाँव की सामूहिक सफाई एवं सन्द्रीय खाद बनाकर अपनी फसल में ड़ालते है। यहाँ के लोग कीटनाशक दवाईयाँ व सरकारी खाद (रासायनिक खाद) का उपयोग नहीं करते।

बीमारी में भी अधिकतर देशी घरेलू दवाईयाँ लौंग-सोठ पर ही निर्भर रहते है।

इस गाँव में इस समय पूर्ण स्वावलम्बन के लिए अपनी खेती की पैदावार बढ़ी है। शायद अगले वर्ष तक सभी कुओं में पानी हो गया तो पैदावार स्वयं बढ़ जायेगी। इसके अलावा नमक, मिट्टी का तेल, मीठा व कपड़े की आवश्यकता रहेगी। मीठे व कपड़े के लिए अगले वर्ष कपास तथा गन्ने की कुछ फसल पैदा करने की बात भी पानी पर निर्भर है। यदि कुओं में पुरा पानी हो गया तो इस दिशा में स्वावलम्बन हो जायेगा।

यहाँ पर दूध की बहुतायत है, इस बहुतायत को देखकर सरकार ने दूध की लूट करने के लिए एक मात्र सुविधा के नाम पर एक दूध की डेयरी चालू कराई थी। गाँव सभा ने अन्य कामों के लिए जयपुर-अलवर की बहुत भागदौड़ की थी लेकिन कुछ नहीं हुआ तो दूध की डेयरी को यह कहकर बन्द करा दिया कि सरकार का जब इस गाँव में अन्य कोई काम नहीं तो हम सरकार को अपना दूध क्यों पिलाये ?

अब इस गाँव में सरकारी सुविधा या सरकार की पहुँच के नाम पर केवल एक खराब पड़ा हैण्डपम्प ही है, इसके अलावा कुछ नहीं है। यहाँ की आपसी समझ बहुत अच्छी है, जिससे उन्होंने एक वर्ष के अन्दर गाँवों से प्रत्येक परिवार के एक व्यक्ति ने 125 दिन गाँव के लिए निशुल्क काम किया है। इस प्रकार 125 X 22=2750 X 50=1,37,500/- रुपये यह ग्रामसभा के द्वारा तैयार की गई ग्राम पूंजी (ग्रामकोष) है। इसके अतिरिक्त 400/- रुपये पेड़ संरक्षण के गाँवाई दस्तूर का उल्लघंन करने वाले से प्रायश्चित स्वरूप मिले है। इस गाँव में सरकारी कोई नौकर नहीं है। पिछले कई वर्षो से फसल नहीं हुई इसलिए अनाज इक्ट्ठा नहीं हो पाया था पर घी खूब होता है। वह इकूटठा हुआ था। उसे उन्होंने 10 अगस्त को भेरू बाबा के स्थान पर "पेड़ लगाकर भण्डारे में खर्च कर दिया, दूध वहुत है, जब भी ग्रामकोष में दूध की जरूरत होती है जितना चाहिए उतना ही इक्ट्ठा हो जाता है। वह सब ग्रामसभा के काम के लिए देने हेतु सब सदैव तैयार रहते है, यह भी "ग्रामकोष ही है। उसी 50/- रुपये प्रत्येक परिवार से ग्रामकोष के लिए अलग से इक्ट्ठे हुए है। इस प्रकार 50 X 70 = 3,500/- वह पूंजी ग्रामकोष में जो इक्टठा होती है उसे बराबर काम में लेते रहते है। कजोड गुर्जर गरीब है, इसकी ग्रामकोष से मदद की है। उसकी बीमारी में सब उसका हाल-चाल पूछते है।

तरूण भारत संघ का कार्यकर्ता श्री श्रवण लाल शर्मा इसी गाँव में रहता है, तथा इसने ग्राम के निर्णयों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तथा यहाँ के युवाओं, बुजूर्गो सभी ने मिलकर जोहड़ बनाने का काम किया है।

इस गाँव में जोहड़ में संस्था ने 25,00/- रुपये केवल पच्चीस हजार रुपये दिये थे, इस रकम को इन्होंने बराबर-बराबर परिवार के हिसाब से बाँट लिया था। इन्होंने अपना जोहड़ बनाते हुऐ यह नहीं देखा कि इस काम के लिए हमे मजदूरी मिलेगी या नहीं। इन्हें जो रकम मिली उसे इन्होंने मजदूरी नहीं सहायता के रूप में देखा है। इनका जोहड़ इनकी स्वप्रेरणा एवम् स्वश्रम

से बना है। इसलिए इस जोहड़ ने यहाँ के सांस्कृतिक महत्त्व को भी स्पष्ट रूप से प्रतिष्ठित किया है।

इस जोहड़ के अनुभव से हम सबका उत्साह वर्धन हुआ, हमें नैतिक बल भी मिला।

इस वर्ष में गुर्जरों की लोसल जैसे अनेको उदाहरण सामने आये, तथा बहुत से बड़े-बड़े जोहड़ तैयार हुए। जोहड़ बनाने में लोगों का उत्साह देखकर इन्हें सम्मानित करने का तय किया गया।

4 फरवरी को जल संरक्षण एवम् पेड़ संरक्षण सम्मेलन तरूण आश्रम में आयोजित हुआ इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सिद्धराज ढ़ड्ढ़ा ने की तथा श्री प्रभाष जोशी ने लोगों को तिलक लगाकर हरे व नीले रंग की चादर उढ़ाकर सम्मानित किया। इस सम्मेलन ने एक बार पुनः जोहड़ निर्माण के काम को तेज करने हेतु प्राण ड़ालने जैसा काम किया तथा फिर पुनः दबा हुआ काम उठने लगा। सम्मेलन में निम्नालिखित लोग सम्मानित किये गये :

जल संरक्षण हेतु सम्मानित व्यक्तियों की सूची-थानागाजी

क्र. सं.	नाम	गाँव का नाम	पंचायत समिति (अलवर)
1	जम्बूरी देवी	गुवाड़ा कालोत	थानागाजी
2.	छम्मी देवी	भीकमपुरा	थानागाजी
3.	कस्तुरी देवी	भीकमपुरा	थानागाजी
4.	भँवरी	जैतपुर गुजरान	थानागाजी
5.	नाथी देवी	गोपालपुरा	थानागाजी
6.	संध्या	गुवाड़ा व्यास	थानागाजी
7.	रूपा देवी	भूरियावास	थानागाजी
8.	सुन्दरा गुर्जर	भांवता	थानागाजी
9.	अमरसिंह जी	रायमपुरा	थानागाजी
10.	विजय सिंह जी	भीकमपुरा	थानागाजी
11.	कैलाश जी	डेरा	थानागाजी
12.	माँगू पटेल	गोपालपुरा	थानागाजी
13.	भगवान साहय	गोविन्दपुरा	थानागाजी
14.	श्री छितरमल जी	अंगारी	थानागाजी
15.	श्री किशन गुर्जर	बैनाड़ा का गुवाड़ा	थानागाजी
16.	लालचन्द शर्मा	सूरतगंढ़	थानागाजी
17.	रामनाथ मीणा	क्यारा	थानागाजी
18.	रामजीलाल संरपच	पिपलाई	थानागाजी
19.	जगदीश पटेल	जैतपुर	थानागाजी
20.	रामकिशन मीणा	बाछड़ी	थानागाजी
21.	गजराज सिंह	जगन्नाथपुरा	थानागाजी

22.	गोर्वधन शर्मा	गुवाड़ा व्यास	थानागाजी
23.	भागीरथ मीणा	बलूवास	थानागाजी
25.	मुरली गुर्जर	बल्लूवास	थानागाजी
26.	रामधन गुर्जर	देव का देवरा	थानागाजी
27.	धन्ना लाल	कोल्याला	थानागाजी
28.	नारायण	कौल्याला	थानागाजी
29.	नाथू	कौल्यला	थानागाजी
30.	गोपाल सिंह	भांवता	थानागाजी
31.	रामनिवास मीणा	अंगारी	थानागाजी
32.	गणपत सिंह	भीकमपुरा	राथानागाजी
33.	बालकिशन बाबाजी	भीकमपुरा	थानागाजी
34.	रोडू	हमीरपुर	थानागाजी

जल संरक्षण हेतु सम्मानित व्यक्तियों की सूची-राजगढ़

क्र. सं.	नाम	गाँव का नाम	पंचायत समिति (अलवर)
1.	सम्पत्ति देवी	देवरी	राजगढ़
2	तीजा देवी	गुर्जरों की लोसल	राजगढ़
3.	मूली दवी	माण्ड़लवास	राजगढ़
4.	लछमा देवी	माण्डलवास	राजगढ़
5.	बोदन वेद्य	मलाणा	राजगढ़
6.	महेश शर्मा	गढ़	राजगढ़
7.	लक्ष्मीनारायण सरपंच	तालाव	राजगढ़
8.	मोहन लाल संसदीय	टहला	राजगढ़
9.	भौंरा	कांसला	राजगढ़
10.	गणपत गुर्जर	क्रास्का	राजगढ़
11.	भूराराम	मान्यास	राजगढ़
12.	बुद्धालाल	गुर्जरों की लोसल	राजगढ़
13.	जगदीश गुर्जर	राड़ा	राजगढ़
14.	प्रभातीलाल मीणा	देवरी	राजगढ़
15.	जगदीश पढ़या	माड़ंलवास	राजगढ़
16.	रमसी	मधुरावट	राजगढ़

जल संरक्षण हेतु सम्मानित व्यक्तियों की सूची-उमरेण

1.	ऊमा देवी	ढेहलावास	उमरैण
2.	पेमाराम मीणा	चिड़ावतों का गुवाड़ा	उमरैण
3.	रामकिशोर गुर्जर	ड़ाबली	उमरैण

पाँचवां वर्ष : 1990-91

जोहड़ बनाने के काम में जमीनों के आपसी विवाद, लैण्ड रिकार्ड का ठीक नहीं होना जोहड़ बनाने में बड़ी बाधा है, लेकिन जोहड़ बनने के बाद उसका पूरा लाभ गाँव को नहीं मिले तो और अधिक कठिनाई होती है। तिलवाड़ी गाँव में छोटेलाल मीणा व श्योनारायण की मेहनत व सेवा भाव के कारण वहाँ एक जोहड़ बनाने का काम चालू हुआ, लेकिन खनन के कारण इसे बनाने में ही बहुत सी कठिनाई भुगतनी पड़ी, बनवाने के बाद भी इसके कारण किसी कुएें में पानी नहीं बढ़ा तो श्योनारायण ने कहा ये खान जब तक चलेगी हमारा गाँव बरबाद हो जायेगा। खान बन्द कराने की पहले से चली आ रही बात और पकड़ गई। इसलिए हमें भी लोगों के साथ इस काम में लगना पड़ा। बाद में लोग खान मालिको से डर के कारण संघ से हटने लगे। फिर भी संस्था को जूझना पड़ा। संस्था का अधिक समय शक्ति खान के काम को समझने में लगने लगी इसीलिए जोहड़ बनाने का काम कुछ मन्दा रहा।

पाँचवें वर्ष में जोहड़ बनाने के काम में बहुत तबदीली भी आई, इस जोहड़ बनाने वाली संस्था में कुछ आज के पढ़े-लिखे लोग जुड़ गये, तो उन्होंने कहा कि जोहड़ तो बनने चाहिए लेकिन जोहड़ का प्रभाव लोगों की समझ में आये। इस हेतु कुछ रिकार्ड रखने, प्रभाव का अध्ययन करने का काम भी साथ-साथ होना चाहिए।

अब तक तो गाँव में जोहड़ बनाने के लिए जगह लोगों ने तय कर ली काम का हिसाब गाँव वालो ने रख लिया, पैसे आदि का बंटवारा सारे गाँव के सामने हो गया, केशबुक में लिख दिया, जोहड़ बनने के बाद उसका नाम आश्रम की दिवार पर लिखा गया बस कहानी खत्म हो गई। गाँव वाले स्वयं उसकी देखभाल करते थे।

इस वर्ष सूरतगढ़ गाँव का पूरा पानी गाँव का की सीमाओं में ही रोकने की योजना बनाई गई, उसमें भी लोगों ने ही तय होने के बाद काम चालू किया, लेकिन यहाँ पर गाँव के साथ जो सहयोग तय हुआ था, वह पूरे गाँव ने सहयोग नहीं किया।

संस्था गरीबों के खेत पर काम करके उनको लाभ पहुँचाना चाहती थी लेकिन वे जोहड़ को केवल पशुओं के पीने का पानी उपलब्ध करने का सीमित मानते थे, उन्हें खेती करने का अनुभव नहीं था, इसलिए जोहड़ के समग्र लाभ का भी उन्हें आभास नहीं था, इसीलिए ही यहाँ रैगर जाति के 50 परिवारों ने पूरा श्रमदान एवम् सहयोग नहीं किया।

दूसरी तरफ यहीं के खेती करने वाले मीणा-गुर्जरों ने आधा तथा आधे से अधिक श्रमदान किया, जिस कारण यहाँ पर कुल मिलाकर काम चल सका तथा इस गाँव में पाँच जोहड़ बन सके।

अब इस गाँव का सारा पानी गाँव की सीमाओं में ही रूक जाता है। साथ-साथ उमरैण के दूरगम स्थान गुर्जरों की ढ़ाणी, क्रास्का में भी गणपत गुर्जर की मदद से जोहड़ बनाने का पुनः अच्छा काम हुआ है। ये जोहड़ का ही पानी पीते है। गुवाड़ा कुण्ड में भी एक जोहड़ बना तोलावास की पहाड़ी में भी छोटी जोहड़ी बनी है।

सरिस्का क्षेत्र के 150 ग्रामों के बीच ग्यारह स्थानों पर एक साथ ही अखण्ड रामायण पाठ

का कार्यक्रम आयोजित हुआ। लोग जंगलात कर्मचारियों के रवैये से बड़े परेशान थे। लोगों पर झूठे केस लगाये गये थे तथा जंगल की बरबादी हो रही थी खनन तथा पेड़ कटाने की वृत्ति बढ़ रही थी। लोग भयभीत थे। लोगों को निर्भय एवम् आत्मविश्वास बनाने तथा अनुशासित करने के लिए यह कष्ट निवारण कार्यक्रम आयोजित हुआ।

इस कार्य का बहुत ही मधुर अनुभव रहा। रामायण पाठ की मूल भावना भी पूरी हुई।

रामायण पाठ करने के पीछे मूल भावना यह थी, कि जोहड़ बनाने व जंगल संरक्षण के काम करने वाले ग्रामवासी बिना झिझक जंगलात विभाग के लोगों के साथ जुड़े , ऐसा हुआ भी। रामायण पाठ के बाद जंगलात विभाग के वन रक्षकों तथा ग्रामवासियों के साथ मिलकर काम करने के अवसर पैदा हो गये है, जिससे गाँव तथा विभाग के बीच की दूरी कम होगी और अब वे दोनों मिलकर जंगल को बचाने के काम में लगे है। क्योंकि यह काम किसी कानून या विचार से सम्पादित नहीं हो सकेगा, सभी के साथ-साथ काम करने में कुछ व्यवहारिक कठिनाई अवश्य है। जंगलात कर्मचारियों को कानून प्रदत अधिकार हैं, जिसमें कर्मचारी तो कुछ भी कर सकता है। दूसरी तरफ गाँव वालों को जंगल तथा जंगली जीवों के रहन-सहन गुण-धर्म की अधिक जानकारी रखने के बावजूद भी उसकी अभिव्यक्ति नहीं कर पाने की ऊर्जा का अभाव होने के कारण भयं आतंक, मजबूरी गरीबी तथा अनिश्चितता है जिससे दासता की प्रकृत्ति बन गई है, इससे मुक्ति के प्रयास चल रहे है। ग्रामवासी एवम् जंगलात कर्मचारी मिलकर अपनी सामलात देह, जोहड़ व जंगलों की पुर्नरचना में लगे है।

रामायण पाठ से निम्न प्रयासों को बल मिला है :

1. ईमानदार, मेहनती जंगल के लिए समार्पित भाव से प्रतिबद्ध जंगलात कर्मचारियों को ग्रामसभाओं द्वारा सम्मानित कराना।

2. जंगलात विभाग एवं ग्रामसभाओं को मिलाकर संयुक्त रूप से जंगल अपराध रोकने के प्रयास।

3. ग्रामवासियों एवम् जंगलात कर्मचारियों को साथ-साथ बैठकर आपसी संवाद बढ़ाना।

4. वनवासियों की जंगल सम्वन्धित समझ कर्मचारियों को भान करना। जिससे उन्हें मिले अधिकार पर उनका स्वयं का प्रश्न चिन्ह लगे और जंगलात कर्मचारियों सोचने लग जाये कि ग्रामवासियों को जब जंगलात विभाग को वनवासियों के सहयोग की आवश्यकता ही नहीं बल्कि प्रबन्ध नेतृत्व भी वनवासियों के हाथ में आ जावे ऐसी तैयारी करने का प्रयास है। जिससे ग्रामवासी जो जंगल में रहते है वे जंगल लगाने एवम् जोहड़ बनाने का कार्य बिना सरकारी रोक-टोक के सम्पादित कर सके।

5. सरिस्का में चल रही 300 अवैध खानों का विभाग कर्मचारियों एवं वनवासी द्वारा मिलकर विरोध करने का प्रयास जिससे गाँव की सामलातदेह, गोचर, जंगल, जोहड़ बचाये जा सके।

6. जंगल में आग-चोरी माफिया के हमले आदि से वचने हेतु कर्मचारियों के साथ ग्रामीण को मिला कर मुकाबला करने हेतु तैयार करना।

7. जंगलात कर्मचारी जिस गाँव में रहता है वहाँ की ग्रामसभा द्वारा बनाये गये दस्तूरों का वह भी पालन करें तथा ग्राम के अनुशासन को बनाये रखने में सहयोग करे। इसके लिए हमारा संवाद दो स्तरों पर विभाग के साथ चालू हुआ है।

8. लोगों में आत्म विश्वास भी पैदा हुआ। पहले लोग अपने गाँव में पुराने जोहड़ो की मरम्मत करने हेतु भी विभाग से डरते थे, लेकिन इस कार्यक्रम के बाद आपसी विश्वास बढ़ गया तथा लोगों ने जोहड़ बनाने का काम तेजी से किया।

इस वर्ष में जयपुर व सवाई माधोपुर जिले में भी जोहड़ बनाने के काम में तरूण भारत संघ सहयोगी बना है। सवाईमाधोपुर में सात जयपुर जिले में तीन जोहड़ बने है।

जोहड़ों के काम से ही सामलात देह को समग्र रूप से बचाने के लिए संघ को उच्चतम न्यायलय जाना पड़ा। और न्यायलय के स्तर पर बहुत ही अच्छे फैसले किये गये है, लेकिन क्रियान्वयन में बहुत कड़वे अनुभव हुऐ। वर्ष के अन्त में जोहड़ बनाने का कार्य पुनः तेज हो गया। संस्था ने माना कि हमारी शक्ति कम है, इसे एक ही अच्छे काम में लगाना चाहिए, वह अच्छा काम जोहड़ बनाना है। जोहड़ की परिस्थिति की सुधार में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस भूमिका को समझ कर ही आने वाले वर्ष में जोहड़ बनाने का मुख्य काम तय किया गया है।

छटा वर्ष 1991-92

गत वर्ष जोहड़ का काम कुछ कम हुआ तो संस्था के कार्यकर्ताओं को चिन्ता हुई। पुनः इस काम को तेज़ करने की योजना बनाई गई। परिणाम स्वरूप काम बढ़कर इस वर्ष सबसे आगे निकल गया। इस वर्ष में खेती के लाभ के लिए भी कुछ अधिक जोहड़ बनाये गये, इन जोहड़ों का स्वरूप भिन्न किस्म का है, इनमें चुनाई का काम कुछ अधिक हुआ लेकिन इसमें जिनकी भूमि पर प्रत्यक्ष लाभ था, उन्होंने अधिक श्रमदान किया।

किशोरी गाँव में सिया बोहरा ने किशोरी नदी को रोकने की ठान ली और उसमें लगा रहा, जब तक की वह रूकी नहीं। इसको रोकने में इसके बेटे भगवान ने भी बहुत मेहनत व लगन से काम किया। इन दोनों के काम से गाँव तथा तरूण भारत संघ के कार्यकर्ताओं में अति उत्साह पैदा हुआ। इस नदी के रूकने से 30-35 कुंओं में लाभ होगा, जो कुंऐ सूख गये थे, इससे आसपास के सभी कुओं में पुनः जल होने लगा है।

काब्लीगढ़ में मातादीन मीणा ने भी रावण वाली नदी जो सूरतगढ़ से आती है, उसको एक स्तर तक रोक आसपास के कुंऐ पुनर्जीवित किये हैं। इस जोहड़ में चुर्री-पिसाई-पत्थर की ढुआई का काम स्वयं मातादीन ने श्रमदान में किया, इस प्रकार लगभग आधा श्रमदान केवल एक ही परिवार ने किया वैसे इसका प्रत्यक्ष लाभ इसी ही परिवार को अधिक हैं

आसपास के कुंओं में पानी होने के साथ-साथ कटाव रोकने, तथा भूमि पर जमाव रोकने में भी बहुत से किसानों को लाभ होगा। यहाँ पानी रूकने से बहुत सी जमीन खेती योग्य हो जायेगी, जिसमें भारी मात्रा में अन्न का उत्पादन होगा।

गढ़बस्ती में भी एक गरीब परिवार ने अपनी खेती की भूमि को बचाने के लिए दो पक्के चैकड़ेम टाईप में जोहड़ बनाने का काम चालू किया है। यह भी अपने पुरे परिवार के साथ इस काम में लगा रहा है। गोपालसिह नामक इस युवक के मन में पिछले तीन वर्ष से ही जोहड़ बनाने की बात चल रही थी, लेकिन गरीबी के कारण यह कार्य नहीं कर सका था, इस वर्ष इसने पेट पट्टी बांधकर जोहड़ बनाने का काम चालू किया है। तरूण भारत संघ ने भी इस जोहड़ में आधा सहयोग किया है।

इन जोहड़ों में पुरा श्रमदान एक परिवार ही कर रहा है, जबकी इसका लाभ कुंओं और खेतों को होगा। एक ब्राह्मण परिवार जो कि दिल्ली रहता है इसके खेतों में बहुत लाभ होगा, लेकिन उसने भी सहयोग करने से मना कर दिया है। शांति देवी के खेत कई वर्ष से खाली पड़े है अब उसमें भी लाभ होगा तथा खेती होने लगेगी।

भेरु कुम्हार, नन्दसिंह, बाबाजी तथा कीरों वाले 10 कुंओ में पानी का लाभ होगा, वे इस कार्य में सहयोग नहीं कर रहे है। इसमें उनका सहयोग लेने के बहुत प्रयास किये है। इसके बाद भी उन लोगों का सहयोग नहीं मिला। फिर भी गोपाल सिंह जी का परिवार अकेला इस कार्य में जुट रहा है।

देवरी गाँव जिसमें कई वर्षों से जोहड़ बनाने के प्रयास चल रहे थे, इस गाँव में इस वर्ष बड़े जोहड़ बनाने का काम चालू हुआ है। इन जोहड़ों के काम को हम अपनी बड़ी उपलब्धि

इस रूप में मानते है, कि यहाँ लोगों खेती की जमीन पर भी जोहड़ बनाना आरम्भ कर दिया है। आगे सम्भावना है, कि भविष्य में यह गाँव इस जोहड़ों के कारण अन्न की दृष्टि से पूर्ण स्वावलम्वी बन जायेगा तथा जिस निजी भूमि को सामलाती होने का डर इनके मन में था वह भी दूर हो गया है, इनकी समझ में आ गया कि जोहड़ सामलात देह है। इसका निजी जीवन में भी कितना अधिक महत्त्व है इसे बचाना तथा बनाना कितना आवश्यक है ?

यह गाँव अब तक जो कि पूर्ण रूप से पशुपालन पर आधारित था, इन्हें अब खेती का भी सामलात्ती सहारा मिलेगा। लगभग सौ वर्ष पूर्व इनके कूंओं से खूब पानी था, अच्छी खेती होती थी, लेकिन अब तो पीने का पानी का भी संकट हो गया, इसलिए अन्त में हारकर इन्होंने जोहड़ बनाने का तय करके इस काम में लगे है। वैसे पहाड़ के ऊपर पशुओं को पीने का पानी उपलब्ध करने के लिए दो छोटी-छोटी जोहड़ी गाँव के चारों तरफ बनाई थी, जिसका उपयोग केवल पशुओं को पीने के पानी के रूप में ही था। एक जोहड़ पहाड़ की तलहटी में सम्पत्ति के प्रयास से बना था, उसके कारण एक कुंऐ में पीने के लिए पानी अवश्य हो गया था, लेकिन यहाँ के लोगों को उससे भी प्रेरणा नहीं मिली थी, इस वर्ष जब भयंकर अकाल की चपेट ने लोगों को ग्रस्त कर दिया तब फिर समझ में आई और समझाने-बुझाने पर वे बड़ी मुश्किल से जोहड़ बनाने में जुटे है।

खनन क्षेत्र में हमने अपनी तरफ से जोहड़ बनाने के बहुत प्रयास किये है। लेकिन कहीं पर भी काम आरम्भ नहीं हो सका। क्योंकि इस क्षेत्र में सामलात देह को बचाने-बनाने की परम्परा समाप्त तो नहीं हुई लेकिन लुप्त सी हो गई है। तभी तो गोचर भूमि में खनन का काम चल सका है। जहाँ सामलात देह को बचाने की परम्परा आज भी जीवित है, वहाँ पर गाँव के लोग ऐसा कुछ नहीं होने देते जिससे पुरे गाँव का नुकसान हो।

क्यारा व सूरतगढ़ गाँव के लोगों को जब यह पता चला कि उनके गाँव की सामलात देह में खान आवंटित कर दी गई है तो पुरे गाँव ने विरोध किया तथा क्यारा में चल रही खान बन्द करा दी।

गाँव में कुछ प्रभावी लोगों ने अथवा बाहर से आकर बसे कुछ लोगों ने हजारी घाटी की सामलात देह, जोहड़ व गोचर पर कब्जा कर लिया था, तो वहाँ के लोग मिलकर संघ में आये, संघ ने इनके साथ बैठकर सब स्थिति को समझा तथा कब्जा करने वाले से भी बात की, लेकिन उसने पुलिस आदि का भय दिखाकर कब्जा नहीं हटाने की धमकी दी।

पैड्यायाला, जगन्नाथपुरा, सिलावटों का गुवाड़ा, कल्सीकला, आदि गाँव के लोगों ने मिलकर एक साथ जोहड़ बनाने का काम आरम्भ कर दिया, कब्जा करने वाले पुलिस के पास गये तो पुलिस ने भी इतने लोगों को एक काम करते देखकर असमर्थता प्रकट कर दी। लोगों ने श्रमदान से तथा टेक्टर लगाकर 10 दिन में जोहड़ बनाकर तैयार कर दिया, कब्जा करने वाले देखते रहे।

पैड्याला के पास गोचर पर बन्जारों ने कब्जा कर लिया था वे भी इस जोहड़ बनाने की प्रक्रिया को देखकर लोगों के डर से अपने आप ही हट गए।

इस प्रकार जोहड़ बनाने का काम लोगों में अच्छा काम करने की ताकत देता है गलती करने वालो को भयभीत कर देता है।

जोहड़ो, गोचरों, गाँवाई जंगलों, कुंओं, गोरों, मन्दिरों, पेड़ों की बरबादी को देखकर लगता है, कि भविष्य में सारी सामलात देह समाप्त हो जायेगी।

आज सरकार चलाने वाले नेता अधिकारी बड़े ही सहज भाव से कह देते है, कि गाँव वाले अपनी गोचर, जोहड़ जंगल नहीं बचा सके इसलिए ही हमने विभाग बनाकर गाँवों के प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने का काम किया है। पर ये बचे तो नहीं। क्या हुआ, ऐसा ? प्रश्न पूछने पर ये फिर जवाब देते है कि जन दबाव के कारण गाँव के गोचर तालाब जंगल सब कुछ समाप्त होते जा रहे है। लोग फिर उलटकर पूछते है, फिर आपकी क्या भूमिका रहीं है ? तो अधिकारी और नेता चुप रह जाते है या उनका जवाब होता है कि अब इन की मालिक तो सरकार है। हम क्या करें ? इनकी बरबादी के लिए आज कोई जिम्मेदारी नहीं लेना चाहता है। वैसे ही सरकार व लोग एक ही है, फिर भी अलग भूमिका के कारण स्पष्टतः अलग-अलग है। ये दोनों ही अपनी जिम्मेदारी से बच रहे है।

ऐसी स्थिति बन गई है, इसका विश्लेषण जब करने बैठते है तो हमें कम से कम ग्यारह सौ वर्ष पूर्व जाकर देखना होगा। उस काल तक भी "सबै भूमि गोपाल की" मान्यता के साथ, जोहड़ों पर सब अपना हक मानते थे, इनकी मरम्मत करना लोग अपना धर्म समझते थे, इसीलिए जोहड़ो की मरम्मत एवम् निर्माण का काम चलता रहा। इसी प्रकार जंगलों की उपज पर किसी प्रकार का कोई कर लागू नहीं था। वन उपज को लोग अपना मानकर उपयोग करते थे। इसलिए लोग जंगलों को नष्ट नहीं करते थे। बल्कि जंगलों को ये अपने जीवन का आधार मानकर उनके संरक्षण का काम करते रहते थे।

हमारे क्षेत्र में राजस्थान के कुछ हिस्सों में गाँव की सार्वजनिक संपदा को सामलात देह कहा जाता था। वह गाँव की मिली जुली देह थी और फिर अपनी देह की रखवाली भला कौन नहीं करेगा। सामलात देह के प्रबंध हेतु कई अलिखित दस्तूरों का विधान था। इस विधान के अनुसार गाँव के गोचर, जंगल, जोहड़ का प्रबन्ध कार्य चलता रहता था। स्वनुशासनपूर्वक चलने वाली व्यवस्था में गलती करने वाले के लिए दण्ड एवम् प्रायश्चित की भी व्यवस्था थी, इसीलिए लोग सामलातदेह की पूरी सुरक्षा करते थे। यह कोई भगवान, देवी-देवताओं का डर या अन्ध विश्वास नहीं था, बल्कि गलती करने वालों के मन पर एक नैतिक दबाव बना रहे, ऐसी एक सुसंस्कृत व्यवस्था थी। यह व्यवस्था महाभारत के भीम को पेड़ उखाड़ने-तोड़ने नष्ट करने जैसे कुकृत्य से रोककर पेड़ों का महत्त्व समझाते रहने के लिए युधिष्ठर को उसके बड़े भाई के रूप में प्रतिष्ठित करने जैसे ही थी।

लोग गाँव की सामलातदेह से पेड़ या अन्य कोई आवश्यक उपज लेने की तिथि निश्चित करते थे। यह तिथि पूरा गाँव एक साथ बैठकर विचार-विमर्श करके ही तय करता था। कांकड़बनी, रखतबनी, देव ओरण्य, वाल आदि में पशुओं की चराई कब करनी है आदि सब मुदों पर खुलकर चर्चा के बाद यह निर्णय होता था।

सामलातदेह का उपयोग करने वाले और उसके संदर्भ में निर्णय लेने वाले एक ही थे इसलिए सभी निर्णय सबके हित में होते थे। आज निर्णय लेने वाला अलग है। यह निर्णयकर्ता सामलातदेह के उपयोग एवम् रख-रखाव से अनभिज्ञ है। जो इसका उपयोग करता है, वह इसके विषय में कोई निर्णय नहीं ले सकता। क्योंकि वर्तमान कानून व्यवस्था ने इस पर से लोगों के हक छीन लिए है। अब लोगों की अपनी कोई व्यवस्था समाप्त करने का दोष केवल पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव ही नहीं बल्कि जीवन शैली में बड़े भोगवाद एवम् उद्योगीकरण की देन है। उद्योगीकरण के कारण पुराने गंवाई दस्तूर एवं भाव समाज से समाप्त होने लगे है। इसके स्थान पर व्यक्तिगत स्वार्थ बढ़ने लगा है, जिस कारण लोगों ने सामालात देह की देखभाल एवम् सम्भाल करनी छोड़ दी है। इसका फल अब हम लोग ही सूखे, अकाल, बाढ़ के रूप में भुगत रहे है। ईंधन, लकड़ी चारे का अभाव लोगों को अब खलने लगा है। वर्तमान व्यवस्था पर अब पुनः प्रश्नचिन्ह लगने लगा है। लोग अब चिंतित है यदि अब कोई इन्हें इनकी पुरानी व्यवस्था बताकर हनुमान की तरह उनकी शक्ति का भान कर दे तो लोग पुनः अपनी सामलातदेह को सामालाती भाव में से सम्भाल सकते है। लोग मिलजुलकर कुटम्व बनाते है कुटुंबों से बनता हैं गाँव। गाँव वह जिसमें रहने वाले सब स्त्री-पुरुष एक दूसरे को जानते तथा पहचानते है। यहाँ ये कुछ नया काम करते है, तो सभी मिलकर निर्णय लेते है। मिलकर उसका पालन करते है जो उसे नहीं मानता है, उसे प्रायश्चित कराने की व्यवस्था भी होती है। प्रायश्चित न करे तो उसका सामाजिक बहिष्कार, उसके साथ बोल-चाल तक बन्द कर देते है। जहाँ उक्त सारी बातों का पालन किया जाता रहा है, वहीं पर आज बचे है कुछ सामलातदेह।

जोहड़ बनाने के छटवें वर्ष के अनुभव में हमने महसूस किया कि इसके बिना गाँव बन ही नहीं सकता, जिस गाँव में सामलात देह समाप्त हुई है, वह गाँव सभ्यता एवम् संस्कृति के तौर पर निर्जिव है। इसलिए गाँव को सजीव बनाने हेतु गाँव की सामलात देह बचाने तथा बनाने की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। क्योंकि हमारे देश में सभी जगह पर जोहड़ को सामलात देह माना जाता है, तथा ये पूरे देश में मौजूद है। इसलिए इनके विषय में समझना तथा इस काम को बढ़ावा देना इसने अपना धर्म मान लिया है। अब तक जो जोहड़ बनाये गये है, उनकी सूची निम्नवत है :

वर्ष 1986 में जोहड़ निर्माण में संस्था का सहयोग 40 टन गेहूँ

क्र. सं.	**तालाब**	**गाँव का नाम**
1.	मेवालो का बाँध	गोपालपुरा
2.	चोंतरे वाला जोहड़	गोपालपुरा

वर्ष 1987 में जोहड़ निर्माण में संस्था का कुल सहयोग 90 टन गेहूँ व 2,35,122 रुपये मात्र रहा है।

3.	बीसा वाला बाँध	गोविन्दपुरा
4.	कडकिया वाला बाँध	साडियास (गोपालपुरा)
5.	बावड़ी वाला बाँध	साड़ियास (गोपालपुरा)
6.	बलाइयों वाला बाँध	साड़ियास (गोपालपुरा)
7.	नया बाँध	गोपालपुरा

8.	गोरे वाला बाँध	गोपालपुरा
9.	तेलियों वाला बाँध	किशोरी
10.	मालियों वाला बाँध	लाला भैया का गुवाडा
11.	फकालों का बाँध	गुवाड़ा फकाल
12.	बीच वाला बाँध	बाछड़ी
13.	जंगल वाला बाँध	बाछड़ी
14.	पीपल वाला जोहड़	बाछड़ी
15.	बीजा की ढाह	काला लाँका
16.	पीपल वाला जोहड़	काला लाँका
17.	उड़द वाला जोहड़	काला लाँका
18.	पीपल वाला जोहड़	डेरा
19.	बलाईयों वाली जोहड़ी	डेरा
20.	राड़ी नीचे वाला जोहड़	भीकमपुरा
21.	अखाड़े वाला जोहड़	भीकमपुरा
22.	राड़ा का जोहड़	रायपुरा
23.	गाँव का जोहड़	भाल
24.	मीणों वाली जोहड़ी	सूरतगढ़
25.	कबीरा वाली जोहड़ी	सूरतगढ़
26.	मीणाओं की राजधानी वाला जोहड़	क्यारा
27.	दौलतपुरा का जोहड़	दौलतपुरा
28.	पीपल वाला जोहड़	बल्लूवास
29.	ठाकरों वाला जोहड़	पिपलाई
30.	बावड़ी वाली जोहड़ी	रूपू का बास
31.	कालोतो वाली जोहड़ी	गुवाडा कालोत
32.	तिराहे वाली जोहड़ी	पिपलाई
33.	सुन्दर जोहड़	पिपलाई
34.	सीरा वाली जोहड़ी	गुवाड़ा सीरा
35.	सोतियों वाला जोहड़	गुवाडा सोती का

वर्ष 1988 तथा 31 मार्च 89 तक तालाब व बाँधों के निर्माण में संस्था का कुल सहयोग 5 लाख 41 हजार 722 रुपये का हुआ है।

क्र. सं.	**तालाब व बाँध का नाम**	**गाँव का नाम**
1.	जगन्नाथ वाला बाँध	जगन्नाथपुरा
2.	चरी वाला बाँध	हमीरपुर
3.	झांकड़ियान वाला बाँध	कालेड़
4.	श्रवण वाला बाँध	हमीरपुर
5.	सरणा की ढ़ाणीवाला बाँध	सरणा की ढाणी

6.	नल का बाँध	नल की ढ़ाणी
7.	बदरी वाला बाँध	हमीरपुर
8.	बैनाडा वाला बाँध	गुवाड़ा बैनाड़ा
9.	ऊपर वाला बाँध	देव का देवरा
10.	नीचे वाला बाँध	देव का देवरा
11.	मन्दिर वाला जोहड़	देव का देवरा
12.	नटाटा मंहगी के जंगल वाला बाँध	नटाटा
13.	जयपुर के रास्ते वाला ब़ाँध	कुवाड़ा कालेड़
14.	जैतपुर गुजरान का बाँध	जैतपुर गुजरान
15.	कालेड वाला बाँध	कालेड़
16.	काल्या वाली जोहड़ी	गली का गुवाड़ा
17.	अंगारी वाली जोहड़ी	अंगारी
18.	जोगियो वाली जोहड़ी	जोगियों का गुवाड़ा
19.	जोगियो की ढ़ाणी वाला बाँध	जोगीयो की ढ़ाणी
20.	गुवाड़ी वाली जोहड़	समरा-हमीरपुर
21.	खेड़ा वाली जोहड़	समरा-हमीरपुर
22.	तिबारे वालो की जोहड़ी	हमीरपुर
23.	करमाली वाली जोहड़ी	पिपलाई
24.	बलाईयों वाला जोहड़	लोठावास
25.	बलाईयों के बास वाला जोहड़ी	कालेड़
26.	नटाटा का जोहड़	नटाटा
27.	कालेड-नटाटा के रास्ते वाला जोहड़	कालेड़-नटाटा
28.	भाँवता का जोहड़	भाँवता
29.	कोल्याला का जोहड़	कोल्याला
30.	भूरियावास वाली जोहड़ी	भूरियावास
31.	नांगल वाला जोहड़	नांगल
32.	चौकी वाला जोहड़	चौकी वाली ढ़ाणी
33.	साड़या-समरा का जोहड़	साडया समरा
34.	गुगली का गुवाड़ा वाला जोहड़	गुगली का गुवाड़ा
35.	रामकिशन वाली बाँधी	बाछड़ी
36.	थानका वाला बाँध	माण्ड़लवास
37.	सरसा का बाँध	माण्ड़लवास
38.	सुराना जोहड़	राजोर-माड़लवास
39.	बलाईयों वाली जोहड़ी	मथुरावट
40.	लाम्बा वाला जोहड़ी	माण्ड़लवास
41.	फूटा बाँध	राड़ा

वर्ष 1989-90 में तालाब व बाँध निर्माण में संस्था का कुल सहयोग 3 लाख 6 हजार 685 रुपये व 5 पैसा का हुआ है।

क्र. सं.	तालाब	गाँव का नाम
1.	काला खेत वाला बाँध	गुजरों का गुवाडा काला खेत
2.	कांसला का चैक डैम	काँसला
3.	राड़ा वाला बाँध	राड़ा
4.	मथुरावट वाला बाँध	मथुरावट
5.	गुजरों की लोसल वाला बाँध	गुजरों की लोसल
6.	घाट तले वाला बाँध	कुण्डल्या
7.	पीपल तले वाला बाँध	कुण्डल्या
8.	छोटी जोहड़ी	कुण्डल्या
9.	रास्ते पर का जोहड़	ब्राह्मणों की लोसल
10.	मीणों वाली जोहड़ी	देव का देवरा
11.	नायला वाला जोहड़	नायला
12.	उमरी की तरफ वाला जोहड़	देवरी
13.	बांका वाला जोहड़	बांकावाला
14.	पहाड़ वाला जोहड़	काँकावाला
15.	गुर्जरों के गुवाडा वाला जोहड़	देवरी गुवाड़ा
16.	पहाड़ वाली जोहड़	देवरी गुवाड़ा
17.	फूटे तले बाँध तले की जोहणी	छोटी इन्दोक
18.	चिड़ावतों का गुवाड़ा वाली	इन्दोक
19.	कन्हैया वाली जोहड़ी	राड़ी मान्याला
20.	माला वाली जोहड़ी	जंगल माला
21.	तोलास वाली जोहड़ी	तोलास
22.	गूजरों वाली जोहड़ी	तोलास
23.	नाडू वाली जोहड़ी	नाडू
24.	दबकन वाली जोहड़ी	दबकन
25.	मान्या वाली जोहड़ी	मान्यास
पूर्ण श्रमदान से बने तालाब		
26.	गुसाईयों वाली जोहड़ी	बल्लूवास
27.	गाडाल्या जोहड़	राड़ा
28.	जोहड़ी माला	किरास्का
29.	गुवाड़े वाली जोहड़ी	गुजरों की लोसल
30.	गाँव ऊपर का जोहड़	क्यारा
31.	कोल्याला वाला बाँध	भूरियावास-कोल्याला
32.	बाँडी जोहडी	भाँवता

33.	बलां गोर्वधनपुरा	राड़ा
34.	पीपल वाली जोहड़ी	बांकावाला
35.	तिवारी वाली जोहड़ी	माण्ड़लवास
36.	खान्या वाली जोहड़ी	कोल्याला
37.	छोया वाली जोहड़ी	भाँवता
38.	खारला वाला जोहड़	नांगल
39.	बीजा वाला जोहड़	बीजा वाला
40.	छोटी जोहड़ी	ब्राह्मणों की लोसल

1 जनवरी 1990 से 31 मार्च 1991 तक बने तालाब व बाँध निर्माण में संस्था का सहयोग 2, 96, 159.65 रु०

क्र. सं.	तालाब	गाँव का नाम
1.	पहाड़ नीचे का बाँध	गुजरों का लोसल
2.	गुवाड़ा वाला जोहड़	गुजरों की लोसल
3.	बीच वाला बाँध	काला लाँका
4.	बान्दी जोहड़ी	कुल्डल्या
5.	बड़ी जोहड़ी	भाँवता
6.	बदरी वाला बाँध	गोपालपुरा
7.	आश्रम वाली जोहड़ी	भीकमपुरा
8.	देवरी वाली जोहड़ी	देवरी
9.	कुमावत वाला बाँध	लापोडिया (जयपुर)
10.	बलाई वाला चैकडैम	धान्दोली (जयपुर)
11.	बड़ा जोहड़	लापोड़िया (जयपुर)
12.	राड़ा का जोहड़	राड़ा (नाडू)
13.	कांसला का बाँध	काँसला
14.	शैतान वाला बाँध	नांगलबानी
15.	गांगे वाली जोहड़ी	काबलीगढ़
16.	भूरियावास भाँवता बाँध	भूरियावास
17.	कुण्ड वाला जोहड़	कुण्ड
18.	डाबली वाला जोहड़	ड़ाबली
19.	बड़ा जोहड़	पुन्दरा
20.	छोटा जोहड़	पुन्दरा
21.	गढ़ी वाला जोहड़	गढ़ी

1 अप्रेल 1991 से 2 अक्टूबर 91 तक तैयार जोहड़

क्र. सं.	तालाब	गाँव का नाम
1.	बैठका वाला जोहड़	गुजरों की लोसल
2.	ग्वाड़ा वाला जोहड़	गुजरों की लोसल

3.	श्यामाला वाला जोहड़	डाण्डा (कोचर) स० मा०
4.	कोचर वाला जोहड़	डूँगर पट्टी कोचर
5.	सुरखा वाला जोहड़	कोचर
6.	खातोलाई वाला जोहड़	खातोलाई
7.	पीली तराई वाला जोहड़	खाल
8.	अमावरा का जोहड़	अमावरा
9.	चतारा वाला बाँध	लोसल
10.	सड़क तले का एनीकट	नांगल बानी
11.	रघुवीर वाला बाँध	नांगल बनी
12.	मीणों वाला बाँध	नांगल बनी
13.	काँकड़ वाला बाँध	काँकड का गुवाड़ा
14.	दौड़ा वाली जोहड़ी	भूरियावास
15.	खांया वाली जोहड़ी	कोलाल्या
16.	स्कूल वाली जोहड़ी	भूरियावास
17.	सांकड़ा पहाड़ वाला बाँध	भाँवता
18.	भरता वाली जोहड़ी	भूरियावास
19.	खाटयाला वाला जोहड़ी	डूमोली
20.	लालपुरा वाला बाँध	लालपुरा
21.	कुण्ड़ा वाला बाँध	कुण्ड़
22.	नवा कुंआ वाला बाँध	मांडलवास
23.	मोटा वाली जोहड़ी	पैड़ल्या
24.	पीपल वाली जोहड़ी	पैड़ल्या
25.	झुग्गी वाली जोहड़ी	पैड़ल्या
26.	झाकडया वाली जोहड़ी	झाँकड़ी
27.	बाली की जोहड़ी	बाली की ढाणी

वाटर शैड प्रबन्ध

1. सूरतगढ़ - 5 बाँध

2. जाड़खा वाला - 3 बाँध

अक्टूबर 2 से 3 मई 1992 तक के तैयार जोहड़

क्र. सं.	तालाब	गाँव का नाम
1.	जोबनाली का बाँध	चावा का बास
2.	सेगराड़ी का जोहड़	चावा का बास
3.	राड़ी का जोहड़	चावा का बास
4.	राजोर वाला जोहड़	राजोर
5.	माल्या वाली जोहड़ी	माला

6.	उदयनाथ जी वाली जोहड़ी	टोड़ी जोथावास
7.	सूरका का जोहड़	कोचर
8.	बोली वाला जोहड़	अमावरा
9.	किशोरी की नदी का बाँध	किशोरी
10.	काबलीगढ़ की नदी का बाँध	काबलीगढ़
11.	हजारी वाला जोहड़	सूरतगढ़
12.	काला वाला जोहड़	सूरतगढ़
13.	कजोड़ मीणा वाला जोहड़	सूरतगढ़
14.	हनुमान मीणा वाला जोहड़	सूरतगढ़
15.	काबलीगढ़ की तरफ का जंगल वाला बाँध	सूरतगढ़
16.	मदादेया वाला बाँध	सूरतगढ़
17.	रावण की नदी वाला बाँध	सूरतगढ़
18.	अरा बाँध	सूरतगढ़
19.	सूरजावाला	देवरी
20.	राडा नीचे वाला बाँध	गढ़ बस्ती
21.	गोपाल सिंह वाला बाँध	गढ़ बस्ती

जोहड़ के प्रचलित नाम

प० उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, म० प्र० के कुछ हिस्सों में तथा राजस्थान के अलवर भरतपुर जिलों से कहलाने वाले "जोहड़" को बीकानेर, गंगानगर, बाढ़मेर, जैसलमेर में "सर" कहते है, तो जोधपुर में "नाड़ा"-"नाड़ी" के नाम से जानते है। कहीं-कहीं पर तालाब कहते हैं। पूर्वी उ० प्र० में "पोखर" कहते है, इसी प्रकार इस जोहड़ को देशभर में अनेकों नाम से जाना जाता है। पूर्वी सीमान्त एवम् दक्षिण प्रदेशों में भी इसको अलग-अलग नाम से जाना जाता है।

जोहड़ की प्रचलित बनावट

जोहड़ सदैव दोयज के चांद की तरह कॉनेकव (अभयतलीय) चन्दाकार होते है, लेकिन जोहड़ के जिस हिस्से पर जल दबाव अधिक हो सकता है, उसका आधार लगभग दो गुणा या तीन गुणा अधिक रखते है। किनारे की पाल का आधार सात हाथ है। तो बीच चौदह हाथ से इक्कीस हाथ तक होता है। बीच में हुऐ अभयतलीय स्थान को कोहनी कहते है। इसमें स्थान के हिसाब के कुछ भिन्नता अवश्य रहती है, पाल का आधार देखने से पता चलता है, कि उसकी मौटाई इक्कीस हाथ के आसपास ही होती है। ऊपरी सतह पूरी पाल की लगभग एक समान होती है, जोग कि प्रायः पाँच हाथ की रखी जाती है। पाल का आधार तय करते समय पाल की ऊँचाई को ध्यान में रखकर पहले बीच की दो लाईने खीची जाती है। जिससे जोहड़ की ऊपरी सतह एक गोलाई चक्र में आ सके।

कभी-कभी जोहड़ में मुख्य जल धारा के सामने पाल को थोड़ी कोनवैक्स स्वरूप देते है। जिससे पाल के ऊपर का जल दबाव दो तरफ बट जाता है। जोहड़ की पाल के अन्दर की साईड,

लगभग चार हाथ की ऊँचाई तक पाल कच्ची हो या पक्की, उसे सीधी रखते है। उसके बाद उसमें एक तिहाई के हिसाब से ढ़ाल दे दिया जाता है ऐसा इसलिए किया जाता है कि जगह-जगह से पशु उतरे एवं चढ़े नहीं। पाल की सुरक्षा भी हो सके। जोहड़ बनाते समय ही उसकी स्थाई सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता था। समतल क्षेत्रों में प्रायः आयताकार होता है, तीन साइड़ों में ऊँची-2 पाल तथा एक साईड़ में पानी लेने, नहाने, पशुओं को जल पिलाने की व्यवस्था होती है, जिसे घाट कहते हैं।

इनकी गहराई अधिक होती है, लम्बाई-चौड़ाई अपेक्षाकृत कम होती है, ऐसा इसलिए करते है उसका वाष्पीकरण होकर जल कम नहीं होता है। उ० प्र०, बिहार, कर्नाटक महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कुछ हिस्सों में इसी प्रकार के जोहड़ बनाये जाते है।

पहाड़ी व पठारी क्षेत्रों में दो ऊँचे स्थानों को एक मिट्टी की पाल बनाकर जोड़ते है। कहीं-कहीं पर बड़े-बड़े त्रिभुजाकर झील जैसे भी बन जाते है, कहीं-कहीं छोटी-छोटी तलाई जैसी बन जाती है। इन जोहड़ों की आगर पहाड़ियों के नीचे की पक्की जगह होती है, इसलिए इन पर पक्की घाट बनाने की जरूरत नहीं समझ जाती है, जिधर से इसमें पानी आता है उधर से ही पशु पानी पीते है। तथा व्यक्ति के पेयजल के लिए ऊँची पाल की तरह से पहाड़ियों को काटकर सीढ़ियों बना दी जाती है। यदि जोहड़ में पानी का दबाव अधिक होता है, तो पाल पर खुले पत्थरों की पिचिंग कर दी जाती है। इस प्रकार के जोहड़ अरावली पर्वत मालाओं, जम्मू-कश्मीर के पर्वतीय क्षेत्र उ० प्र० के उत्तराखण्ड, बुन्देल खण्ड, दक्षिण प्रान्तों के ड़ेकन में बनाये जाते है।

हमारे राजस्थान में जोहड़ मुख्यता चन्द्राकार एवं आयताकार होते हुऐ भी धनराशि की उपलब्धता के आधार पर इन्हें कहीं पर चारों तरफ से पक्की सीढ़ियों का रूप बना दिया जाता है। कहीं-कहीं पर केवल कच्ची मिट्टी के बनाये जाते हैं। जोहड़ बनाने के लिए स्थान चयन करना बहुत महत्त्व पूर्ण समझा जाता है, इसकी आगोर तथा जल भराव क्षेत्र के पुराने पारखी से पूछकर ही जोहड़ निर्माण का काम किया जाता था।

एक विशेष प्रकार की मिट्टी जिसे "मोरम" कहते है, जहाँ मोरम होती है वहाँ पर ही जोहड़ बनाते है, जिससे ज्यादा दिनों तक इसमें पानी रुक जाता है। रेगिस्तान मे मोरम मिट्टी के बिना जोहड़ बन ही नहीं सकता, इसलिए ही इस मिर्ट्टी की तलाश की जाती है। जहाँ वह मिट्टी मिली वहीं पर जोहड़ बनाये गये। जोहड़ के स्थान से निकली मिट्टी को "गारा" बनाकर लोग मकान बना लेते है। ये मिट्टी के बने मकान सैकड़ों वर्ष तक चलते थे।

जोहड़ बनाने हेतु स्थान निर्माण की परम्परागत पूर्व तैयारियाँ एवं विधि

जोहड़ की आवश्यकता अनुभव होने पर लोग आपस में चर्चा करते है, चर्चा कुछ दिनों चलती है। चर्चा के बाद गाँव के लोग मिलकर ही जोहड़ का स्थान तय करते है। यह स्थान प्रायः गाँव के गोचर की तरफ ही तय होता है, क्यों कि जिधर गाँव के पशु चरने जाते है उधर ही लोग सामान्य तौर स्थान ढूंढ़ते है एवम् तय करते है। स्थान की अनुकूलता यह होती है, कि वह

स्थान थोड़ा नीचे, तथा पहाड़ियों की ढ़ाल में होना चाहिए, यहाँ की मिट्टी कुछ चिकनी हो तथा पथरीली मिट्टी नहीं हो। इसकी आगर गहरी हो। आगर में इक्ट्ठे होने वाले पानी के साथ पत्थर, मिट्टी बहकर नहीं आते हो। गाँव की शौचादि जाने की जगह भी उधर नहीं हो।

गाँव की अन्य गन्दगी भी इस जोहड़ में नहीं आये ऐसा स्थान ही अनुकूल माना जाता है।

स्थान तय करने के बाद शुभ मूहर्त निकालते है। यह मूहर्त तारा डूबने से पूर्व या देव उठने के बाद ही होता है। इसका कारण यह भी होता है, कि लोगों को उन्हीं दिनों में जोहड़ बनाने का समय रहता है एवम् इन दिनों में वर्षा नहीं होने कारण काम करने की अनुकूलतायें भी रहती है।

शुभ मूहर्त के दिन गाँव के लोग मिलकर नियत स्थान पर जाते है, भूमि पूजन हेतु थाल, जल से पूर्ण लोटा, चावल, गुड, आटा, हल्दी, पीली मिट्टी, रोली-मोली आदि सामग्री के साथ मूहर्त साधा जाता है। पाँच आदमी मिलकर पाँच परात मिट्टी खोदकर नियत स्थान पर पाल को नंगाकर देते है। लोग पाल की लम्बाई-चौड़ाई ऊँचाई पहले से ही चर्चा करके तय होने पर आते है, उसी के अनुसार फावड़े-गैंती से जमीन पर निशान बना देते है। पाल की चौड़ाई के लिए एक लाईन होती है, दूसरी लाईन, जहाँ तक मिट्टी खोदनी है, तथा जहाँ से नहीं खोदनी उसके विधिवत निशान लगा दिये जाते है। इस पूरी प्रक्रिया को मूहर्त साधना कहते है।

मूहर्त के बाद कभी भी आकर चौकड़ियों के हिसाब से या अमानी में जैसा गाँव तय करता है। उसके अनुसार काम चालू हो जाता। आजकल प्राय चौकड़ियों से ही काम चलता है। चौकड़ी का अर्थ है, 10 फुट लम्बी 10 फुट चौड़ी, एक फुट गहरी जमीन जिसमें 100 मण मिट्टी होती है। उसे एक चौकड़ी कहते है। अमानी का अर्थ है, गाँव के लोग मिलकर साथ काम पर गये साथ लौट आये। ऐसा वहीं पर सम्भव है जहाँ गाँव में अच्छी समझ संगठन व प्रेम है। गाँव में प्रभावी अनुशासन है, तो अमानी के काम में बड़ा सुख व आनन्द मिलने के साथ-साथ काम ही सहज ही अधिक हो जाता है। गुर्जरों की लोसल गाँव में एक जोहड़ अमानी से बना था, इसी प्रकार देवरी गाँव की 6 कि० मी० लम्बी सड़क भी अमानी से ही बनी थी। ऐसे ही कारस्का तथा भाँवता के जोहड़ अमानी में तैयार हुऐ थे।

आगार से मिट्टी खोदकर पाल में दो फुट ऊँची तह बनाते जाते है। फिर एक तह के बाद दूसरी तह डालकर पाल की ऊँचाई जितनी करनी है, उतनी करते जाते है। ये तह दबाने के लिए पुराने जमाने में बैल चलाते थे, आजकल टेक्टर या अन्य भारी पत्थर चलाते है, जिससे जोहड़ की पाल में अच्छी दबावट (कम्पक्शन) हो जाती है। पाल पर यदि कहीं पर जल का अधिक दबाव हो या कोई सीधा नाला पाल से टकराता हो तो उसमें कोहनी लगा देते है जिससे जलधारा का दबाव कम हो जाता है।

जोहड़ में सिल्टिगं नहीं होवे इसके लिए जल धाराओं में (धोरों) पर खुर्रे बना देते है। ये कोरे पत्थर के होते है, जिनके ऊपर से जल बह जाता है, मिट्टी आदि वहीं पर रूकी रहती जिससे भूमि कटाव एवम् जमाव दोनों ही रूके रहते हैं।

जोहड़ की आगोर छोटी है तथा आगर अच्छी बड़ी है तो जल बाहर दूर से भी लाना पड़ता है। इस प्रकार जल लाने के लिए धोरे (नाले) बनाने पड़ते है। इन नालों में जगह-जगह चादर बनानी पड़ती है, जिससे पानी के साथ मिट्टी नहीं कटे। जमीन जमी रहे वह अनुकूलता देखनी पड़ती है, वहाँ चादर बनाने की जरूरत है या खुर्रे से ही काम चल जायेगा। चादर में पत्थर-चूने की चुनाई होती है तथा खुरा केवल पत्थर का बनाया जाता है।

गाँव के जोहड़ में गाँव के गन्दे नाले का पानी नहीं आये ऐसी व्यवस्था कर दी जाती है। नाले को दूसरी दिशा में मोड़ दिया जाता है। ऐसी सब पूर्ण तैयारियों के बाद ही जोहड़ का कार्य चालू होता है।

ग्राम में जोहड़ बनाने हेतु काम की जुम्मेदारी का बंटवारा करना

जोहड़ की लम्बाई-चौड़ाई पाल की मौटाई व ऊँचाई आदि तय करते ही कुल काम को आंककर, उसको कैसे पूरा करेगें यह चर्चा होती है। गाँव के कुल परिवारों की संख्या जोड़कर उससे कुल काम को तकसीम कर देते है। प्रत्येक परिवार जब यह स्वेच्छा से अपना हिस्सा तय कर लेता है या समझ लेता है तो स्वयं अपनी अनुकूलतानुसार एवं गाँवाई निर्णयानुसार जोहड़ में श्रमदान निर्धारण हो जाता है। यह गाँवाई सहयोग से बनने वाले जोहड़ की तैयारी प्रक्रिया ही है।

राजा-महाराजाओं, सेठ-साहुकारों या साधु-सन्यासियों के आर्थिक सहयोग से बनने वाले जोहड़ की भी पूर्व तैयारी के लिए जहाँ जोहड़ बनता था, वहाँ के लोगों के साथ सबसे पहले बातचीत करके उनको विश्वास में लिया जाता था।

हम भी लोगों की पूरी मन तैयारी के बाद ही जोहड़ निर्माण का काम आरम्भ करते है क्योंकि इन जोहड़ों की देखभाल व मरम्मत करने की जुम्मेदारी तो यहाँ के लोगों की ही रहती है। इसलिए भी लोगों से बात करके उनकी पूरी तैयारी के बाद ही काम का बंटवारा होता है। जोहड़ से जिन लोगों को जितना लाभ होगा इसी हिसाब से काम की जुम्मेवारी तय कर ली जाती है। जो लोग मिट्टी के पारखी हैं, वे यह बताते है कि इस मिट्टी से पाल आगर का हिसाब लगाकर अफरा तय करते है, अफरा का स्थान भी गाँव के बुर्जग लोग ही तय करते है। कभी तेज वर्षा आ जाये तो जोहड़ की क्षमता से अधिक पानी आये तो सुरक्षा का पुख्ता बन्दोबस्त करने के लिए पिछली सैकड़ो वर्षों की वर्षा का प्रमाण भी देखकर दूसरी ऊँची अपरा भी बना देते हैं।

सामलात देह पर बने जोहड़ में मोरी नहीं लगाते है लेकिन खातेदारी की खेती वाली जमीन पर जब कोई जोहड़ बनता है तो उसमे मोरी लगाई जाती है, जिससे फसल के समय पानी भर जाये तो अधिक पानी को बाहर निकाल देते है।

अफरा एवम् मोरी लगाने का सारा काम गाँव के लोगों के हिस्से में रहता है, मिट्टी खोदने के लिए काम करने वालों को तीन चौथाई सहयोग संस्था कर देती है। जो जोहड़ सामलात देह पर नहीं बनाये जाते उनमें संस्था आधा ही सहयोग करती है। वैसे जोहड़ बन जाने के बाद वह सामलात देह ही हो जाती है, लेकिन खातेदारी की जमीन पर बना होने के कारण फसल का अधिक लाभ कुछ ही परिवारों को मिल जाता है। इसलिए अधिक लाभ लेने वाले परिवारों से

अधिक श्रमदान लिया जाता है। गाँव के लोग भी देखकर ही लाभ के अनुसार श्रमदान का बँटवारा करते है।

अभी तक देखने में आया है कि सानलाती जोहड़ बनाने में लोग प्रायः अमानी में काम करते है, जिसमें "घर मैल" आदमी काम पर जाता है। दिन भर साथ काम किया, इसमें अलग से कोई बंटवारा करने की आवश्यकता नहीं होती। यदि गाँव के हिसाब सें काम करते है तो कुल काम आंककर बराबर-बाँटकर काम पूरा कर देते हैं।

यदि कुछ परिवारों को कम या अधिक लाभ होने वाला है तो पूरे काम का हिसाब लगाकर उसका लाभ के अनुसार बंटवारा कर लेते है तथा लोग क्षमता के अनुरूप समय तथा काम की अनुकूलता देखकर अपनी-अपनी जुम्मेदारी पूरी कर देते हैं।

जोहड़ का उपयोग

जोहड़ सीधे-साधे लेकिन असरकार होते हैं। इनका हमारे जीवन से बहुत गहरा सम्बन्ध है। इन्हीं से हमारी पेयजल पूर्ति होती थी तथा 1950 में भारत में कुल सिंचित क्षेत्र की 17% सिंचाई भी जोहड़ से की जाती थी। 1950 से पहले तो हमारे जोहड़ ही सिंचाई के प्रभावी साधन थे। सूदूर भूतकाल में तो 80% से भी अधिक सिंचाई इन्हीं जोहड़ों से ही होती थी इनमें पाये गये शिला लेख इसके जीते जागते प्रमाण है। ये जोहड़ हिन्दुस्तान के हर कोने में पाये जाते रहे है। सबसे अधिक समुद्रतटीय जिलों में तथा पूर्वी उत्तर-प्रदेश बिहार और राजस्थान में। इनसे होने वाली सिंचाई का क्षेत्रफल 1860 तक निरन्तर बढ़ता रहा था। इस स्वावलम्बी सिंचाई योजना को अंग्रेजों ने जानबूझकर खत्म करने का जो षडयंत्र रचा था, उसे स्वतंत्र भारत के योजनाकारों ने बरकरार रखा है।

जोहड़ जो कि अकाल, बाढ़ से बचाता है, राजस्थान जैसे सूखे प्रदेश में भूमि का पुनः सिंचन करके कुंऐ आदि से पेयजल उपलब्ध कराता है, भूमि कटाव रोककर परिस्थितियों को बनाये रखता है। पशुओं के लिए पेयजल की सर्वोत्तम व्यवस्था "जोहड़" ही है। ये गाँव में होने वाले मरण, विवाह आदि के संस्कारों के कारण भी सम्मान का प्रतीक है।

जब भी अकाल या सूखा पड़ता है, तो सरकार को फिर से जोहड़ों की याद आने लगती है। यह उनके लिए अभी केवल अध्ययन तक ही सीमित है। जोहड़ो के उपयोग के विषय मे अब से पूर्व जो महत्त्वपूर्ण अध्ययन हुए हैं, इनका मानना है, कि जोहड़ों से सिंचित भूमि पर असिंचित भूमि की अपेक्षा तीन गुणी अधिक पैदावार होती है। सूखे इलाको में जोहड़ों की सिंचाई सबसे अधिक कारगर है।

जोहड़ों के परम्परागत उपयोग राजस्थान में तो अब पुनः प्रतिष्ठित करने ही होगें। अन्यथा यहाँ की राजस्थान नहर आदि के दुष्पपरिणाम भुगतर हमें पछताना पड़ेगा तब हमें "जोहड़ संस्कृति" की याद आयेगी। तब तक हम विनाश के कगार पर पहुँच जायेगें। और फिर चाह कर भी कुछ नहीं कर सकेगें, इसलिए हमें अभी उस दिशा में सोच—विचार कर अधिक तेजी से काम करना चाहिए, तथा अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को पुनः प्रतिष्ठित करने के प्रयास जारी रखने चाहिए।

जोहड़ की संस्कृति

किसी भी संस्कृति की प्रकृति, स्वरूप और गति का निर्धारण वे आदर्श या मूल्य करते हैं, जिनकी सिद्धि में ही कोई समाज या व्यक्ति अपने अस्तित्व की सार्थकता का बोध करता है। व्यक्ति का अस्तित्व, स्वावलम्बन हो सकता है लेकिन प्रकृति के एक मामूली हिस्से के रूप में बना रहता है। मानव ने प्रकृति के बीच में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु पशुपालन-खेती करने के लिए जोहड़ बनाने जैसा काम जब तक किया जब तक मानवीय अस्तित्व को खतरा नहीं हुआ।

संस्कृति को इसीलिए मूल्य-दृष्टि भी कहा जाता है, क्योकि मूल्यों के अर्जन की प्रक्रिया को वही आज सांस्कृतिक प्रक्रिया माना जा रहा है। जिस प्रकार संस्कृति का दायरा सनातन मूल्यों के धारणात्मक स्तर तक सीमित रखने वाले इनके मूल्य अर्जन की सामाजिक-वैयक्तिक प्रक्रिया तथा अन्य जीवनोपयोगी बातों को उससे अलग करके देखती है। ऐसे लोग जोहड़ को संस्कृति व सभ्यता का महत्त्व पूर्ण अंग मानते हैं।

उपयोगिता के क्षेत्र को सभ्यता के दायर में रखने से सांस्कृतिक और सभ्यता के बीच एक विभाजन रेखा खिंच जाती है। ऐसी स्थिति में संस्कृति सिर्फ मानसिक वस्तु रह जाती है। और अन्य सारा भौतिक-सामाजिक जीवन सभ्यता के क्षेत्र में अर्न्तगत समझ लिया जाता है, लेकिन इसका प्रक्रियागत और आत्यन्तिक महत्त्व नहीं है।

इस विभाजन को आत्यन्तिक मान लेने की वजह से ही इतिहासकार संस्कृति का अध्ययन करते हुऐ अपने को धर्म-दर्शन, कला और साहित्य तक ही सीमित रखते है और अन्य जीवन को उसके क्षेत्र से बाहर मान लेते हैं।

इस प्रकार संस्कृति का क्षेत्र सिर्फ मानसिक व्यापार तक सीमित रह जाता है और उसका यर्थाथ जीवन से कोई रिश्ता स्थापित नहीं होता। विचार और आचरण में एक दुनिवार असंगति विकसित हो जाती है।

अतः संस्कृति के बारे में किंसी भी विचार-विमर्श से पूर्व यह समझ लेना जरूरी है, कि संस्कृति केवल मूल्य-दृष्टि ही नहीं, मूल्य-निष्ठा भी है। वह केवल विचार नहीं, विश्वास और आचरण भी है। चेतना के विकास का अर्थ विचार का ही नहीं अनुभूति का विकास भी है। अत जब तक हमारे बौद्धिक निष्कर्ष और देनन्दिन और सहज अनुभव एक नहीं हो जाते तव तक संस्कृति की प्रक्रिया अधूरी रह जाती है और इसलिए अंतर्विरोधपूर्ण हो जाती है।

संस्कृति सभ्यता को बल्कि पूरे जीवन को ही अपने दायरे में ले लेती है। यदि जीवन किन्हीं मूल्यों की ओर उन्मुख और उनसे अनुप्राणित है, तो उसके हर पक्ष में उन्हीं मूल्यों की अनुप्रेरणा प्रतिबिम्वित होनी चाहिए। संस्कृति सम्पूर्ण जीवन के गुणात्मक उत्कर्ष की प्रक्रिया है। किसी भी जाति की मूल्य-दृष्टि, उसकी आस्थाएं और विश्वास इस गुणात्मक उत्कर्ष की प्रक्रिया और स्वरूप का निर्धारण करते है। जिन आस्थाओं और विश्वासों का एक चरम और साध्य रूप होता तथा दूसरा साक्षेप और साधनात्मक रूप। इसलिए संस्कृति और सभ्यता में भेद नहीं करना चाहिए। मैं तो स्वयं को उन विचारों से सहमत पाता हूँ जो सभ्यता को संस्कृति का साधनात्म रूप मानते

हैं। आवश्यक यह है, कि इन दोनों रूपों में आन्तरिक और जहाँ तक सम्भव हो बाह्य संगति भी हो और साध्य रूप साध्नात्मक रुप में भी बराबर प्रतिबिम्ब होता रहे। हमारी सामाजिक व्यवस्था और आचरण यदि उन सनातन मूल्यों और विश्वासों को प्रतिबिम्ब नहीं करते जो हमारी संस्कृति की केन्द्रीय प्रेरणा हैं तो यहीं मानना होगा, कि संस्कृति एक समग्र स्वरूप ग्रहण नहीं कर सकी है—वल्कि वह एक द्विजातीय संस्कृति है, जिसका अर्थ होता है कि हमारा मन एक द्विजातीय मन अतः अस्वस्थ मन है। यह द्विभाजन ही संस्कृति में अन्तविरोधों के विकसित होने का कारण बनता है। संस्कृति मूल्यदृष्टि और मूल्यनिष्ठा होने के साथ-साथ मूल्यों को अर्जित करने की प्रक्रिया भी है। प्रक्रिया है, अतः कालबद्ध और देशबद्ध है। अतः इस ऐतिहासिक प्रक्रिया में विभिन्न भौगलिक मानवीय और आर्थिक राजनीतिक कारणें से कई वार अन्तविरोध विकसित हो सकते है, होते है। लेकिन संस्कृति की जीवंतता या सर्जनशीलता का एक लक्षण यह भी है कि वह निरन्तर अपने अन्तविरोधों की पहचान करती रहती है। मनुष्य एक चेतन सत्ता है अतः उसमें यह सामर्थ्य है, कि वह इन अन्तविरोधों को समझ कर उनका समाहार करने की दिशा में सचेष्ट हो। इसके बिना संस्कृति सड़ने लगती और मर जाती है। संस्कृति जीवन्त होती है, जीवाश्म नहीं। हम यदि एक जीवित संस्कृति बनाये रखना चाहते है तो हमें देखते रहना होगा कि हम कहाँ और क्यों अपनी मूल प्रेरणाओं से विचलित हुए हैं। और कैसें इस द्विभाजन को मिटा सकते हैं। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हमारे पास अपने को एक संस्कृत समाज कहने का कोई नैतिक औचित्य नहीं बचा रहेगा।

प्रकृति में मानव केवल एक ऐसा प्राणी है जिसकी मूल्य दृष्टि व मूल्य निष्ठा का वर्णन करने हेतु वह अपनी इच्छानुसार अपने लिए उत्पादन करके जीवित रह सकता है वैसे तो मानव की इच्छा व क्रिया शक्ति के कारण ही कपड़े, मकान, भोजन के रूप में उत्पादन हेतु पंचमहाभूमतों, मिट्टी, जल, सूर्य, आकाश वायु का उपयोग आरम्भ हुआ था कुछ समय तक तो यह उपयोग सहज एवम् प्राकृतिक स्वरूप में बना रहा। ठीक उसी प्रकार जैसा की दूसरे प्राणी उपयोग करते है। जब तक मानव ने ऐसा किया तो मानव भी आदि मानव कहलाता रहा। जैसे -जैसे इस मानव की संख्या बढ़ी तो इन्हें प्राकृतिक रुप में खाद्य साम्रगी प्राप्त करने में कठिनाई होने लगी। इन कठिनाईयों से संघर्ष करने हेतु मानव मस्तिष्क के विकास की प्रक्रिया आरम्भ हो गई।

रहन-सहन, खान-पीने की जरूरत पूरी करने के लिए उद्यम आरम्भ हुआ। सबसे पहले भोजन हेतु पशुपालन व खेती शुरू हुई। पहले-पहले तो यह काम नदियों के किनारे आरम्भ हुऐ, फिर इन्होंने नदियों से हटकर बसावट आरम्भ की तो इन्हें वहाँ पर भी वर्षा जल रोकने की आवश्यकता हुई। आरम्भ में यह काम कुछ लोगों के छोटे समूह ने आरम्भ किया होगा। इस समूह ने वर्षा के दिनों में छोटा जोहड़ बनाया होगा या नदी के किनारे रहकर ही पहले पानी पीने हेतु जोहड़ की व्यवस्था करके फिर वहाँ बस गये होंगे। या यूँ भी कह सकते है, कि व्यक्ति ने जमीन खोदकर पानी इकट्ठा करने हेतु जोहड़ का काम आरम्भ किया था। इस जोहड़ का उपयोग भी पहले निर्माण करने वालों ने लिया होगा। इसके लिए वे उसके पास बसे होंगे, फिर और भी वहाँ आकर वसते गये होगें या आवश्यकतानुसार नये-नये जोहड़ बनते चले गये होंगे। जोहड़ के किनारे बसे पूरे समूह या समुदाय के लोग इस जोहड़ को मिल-जुलकर पूरी आपसदारी के साथ देखभाल करते थे। हमारी आपसदारी पर आधारित समाज में जोहड़ निर्माण करने वालों

का मन बहुत उदार रहा होगा, क्योंकि वे कठोर होते तो उसका उपयोग केवल अपने लिए ही करते लेकिन ऐसा नहीं होता था। घुमन्तू समुदाय भी अपने पशुओं को उन जोहड़ो का पानी पिलाते थे। हमारे इतिहास में ऐसी बहुत कम घटना है, जिसमें पीने के पानी हेतु आपसी संघर्ष हुआ है। प्रायः जल, थल, आकाश, वायु, ताप पर सबका हक समान थी। सबै भूमि गोपाल की। इसलिए कहीं भी जाकर कोई जोहड़ बना सकता था। जहाँ जोहड़ बनाया जाता था, वहाँ के लोग पूरी सहृदयता से सहयोग करते थे। जोहड़ आपसदारी को मजबूत बनाते थे। घुमन्तू लोग (बन्जारे) भी जोहड़ों का निर्माण करते थे।

पन्द्रहवी शताब्दी तक जोहड़ों की संख्या बहुत कम थी, क्योंकि आवश्यकता भी कम थी। लोगों की वर्षा-जल प्राकृतिक झील तथा नदियों से पूर्ति हो जाती थी। कभी नहीं पानी नहीं रहा तो लोग घुमने निकल जाते थे। पानी की कमी के कारण भी राजस्थान में लोग सबसे अधिक घूमते थे। धीरे-धीरे यहाँ पर लोगों द्वारा पीने के पानी हेतु कुंई या कुण्ड़ी , बावड़ी, झील, टांका बनाने का काम चालू हुआ था। इनके सहारे ही यहाँ पर सवसे कम वर्षा के क्षेत्र जैसलमेर भी व्यापार केन्द्र बन गया था। यहाँ बड़ी-बड़ी हवेलियाँ महल तथा मन्दिर बने थे। ये सब जोहड़ के कारण ही सम्भव हुआ था।

इसी प्रकार देश के कोने-कोने में जैसी आवश्यकता होती थी वैसी ही वर्षा जल को रोकने की व्यवस्था थी। कर्नाटक व बुन्देलखण्ड में आज भी वहाँ के पुराने जोहड़ अपनी बुलन्दगी की दास्तान सुना रहे है।

भारतीय समाज का वर्तमान रुप भी देखें तो इसकी बनावट में जोहड़ आज भी अपना स्थान रखता है। समाज में जैसे-जैसे बदलाव आया वैसे ही जोहड़ की स्थितियाँ बनती गई जैसे की अलवर जिले का भानगढ़ शहर अपनी जल व्यवस्था के कारण ग्यारहवी शताब्दी में ही सुन्दर सीधी लाईन में बने मकान, चौपड़, पानी की निकासी हेतु नालियाँ, पेयजल के लिए सुन्दर व शुद्ध जल का पक्का टाँका बना था। इसी प्रकार पुराने काल में पारा नगर जिसे अब नील कण्ठेश्वर के नाम से जानते है। यहाँ बुच्छ नामक राजा ने एक बड़ा सुन्दर पक्का जोहड़ बनवाया था। जब तक इस जोहड़ में पानी रहा तब तक यह शहर फलता-फूलता रहा। बाद में इसमें जल नहीं रुका किसी अज्ञात स्थान से पानी सूख जाता था, जिससे पानी की कमी हो जाने के कारण यह सुन्दर शहर उजड़ गया था। इस प्रकार ये जोहड़ सभ्यता को प्रभावित करते रहे। क्योंकि हमारी सह-अस्तित्व, सहयोगी जीवन पद्धति पर ही आधारित सभ्यता थी। सहयोग व आपसदारी विद्यमान रही है तब तक उतनी ही संख्या में नये जोहड़ बनते चले गये। हमारे यहाँ मानव को सर्वोपरी माना गया महाभारत के एक श्लोक में कहा भी है, "गुहा ब्रह्मसहिदा वो कर्वामि न मानुषात श्रेष्ठतर हि किञ्चित। विचारशील मानव की आत्मनिष्ठा मूल्य दृष्टि व मूल्यनिष्ठा के कारण उसे स्वतंत्रता मिली है। मानव ने अपने जीवन मूल्य निष्ठा को अर्जन करने हेतु ही जोहड़ निर्माण का काम किया था। जब तक मानव जीवन पूर्ण प्रकृतिमय बना रहा, मानव जाति के सामने कोई संकट न अर्न्तविरोध नहीं आया।

जब मानव प्रकृति की दास्ता से मुक्त होने का मार्ग खोजने के मनोरोग से ग्रसित हुआ तो संस्कृति का विघटन आरम्भ हो गया। हम एक प्रकार के आन्तरिक एंकागीपन से पीड़ित हो गये। जैसे-जैसे हम एंकागी वनने लगे तो जोहड़ निर्माण की प्रक्रिया टूट गई। लेकिन हमारे भारतीय

समाज की सांस्कृतिक जड़े बहुत गहरी होने के कारण भारतीय मानव की आत्मनिष्ठा, मूल्यदृष्टि, मूल्यनिष्ठा, श्रद्धा विश्वास समूल नष्ट नहीं हुई, जिसके परिणाम स्वरूप मानव समाज सभ्यता व संस्कृति में सतत होने वाले बदलाव के बाबजूद यहाँ पर मनुष्य ने अपने तात्कालिक व दीर्घकालीक सुख-सम्मान प्राप्त करने की चाह से जोहड़ बनाने का काम जारी रखा या यू कहे, जिसके कारण कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक पानी प्रबन्ध की दृष्टि से भारत एक समान है। मूल्यदृष्टि, मूल्यनिष्ठझ और मूल्यों को अर्जन करने की प्रक्रिया में हमारी गुलामी अवश्य बाधा बनी, जिसके कारण हमारी सह अस्तित्व आपसदारी व सहयोग की जीवन्त संस्कृति जीवाश्म बनने लगी।

हम अपने अर्न्तविरोधों को समझकर उनका समाहार करने लगें तथा अपनी आपसदारी सहअस्तित्व की संस्कृति को पुर्नजिवित करें। इस दिशा में काम करने के लिए व्यक्ति की सबसे पहली आवश्यकता जल का प्रबन्ध करने के काम से शुरू आत कर सकते है। गाँव-गाँव तथा कस्बा व शहरों के परम्परागत जल स्रोतों, जोहड़ का निर्माण कार्य आरम्भ करे जिससे हमारी मूल संस्कृति पुर्नजीवित करने हेतु आर्थिक सामाजिक एवम् सांस्कृतिक बदलाव की प्रक्रिया आरम्भ हो सकेगी।

जोहड़ों से आर्थिक बदलाव :

जोहड़ ग्राम स्वावलम्बन का आधार है। यह ग्राम संसाधन संर्वद्धन का एक ऐसा सशक्त आयाम है, जिसके निर्माण में लगने वाले शरीरश्रम की क्षतिपूर्ति पहले एक वर्ष में ही हो जाती है। यह गाँव की मिट्टी और जल को बाहर बहने से रोकता है। मिट्टी और जल ही गाँव के लोगों के लिए जीवनीय द्रव्य है। यह अन्न तथा जल की पूर्ति करता है। कपड़ा-मकान भी इसी के सहारे बनता है। जोहड़ की मिट्टी प्रत्यक्ष रूप से मकान बनाने योग्य बन जाती है। कपड़े के लिए उगने वाली कपास भी जोहड़ की काली मिट्टी में अच्छी पैदावार देती है। जोहड़ की आगर-में बिना रसायनिक खाद के फसल बहुत अच्छी होती है। एक फसल ही दो फसलों से अधिक लाभकारी होती है, क्योंकि जोहड़ की आगोर में बोई गई फसल में ही किसी प्रकार के खर्चे नहीं होते केवल बीज डालना पड़ता है। आगोर में चूंकि रासायनिक खाद ड़ालने की जरूरत नहीं होती इसलिए इस फसल में कोई बीमारी भी नहीं लगती और पेस्टीसाईट़ आदि के खर्चो से मुक्ति मिल जाती है तथा जमीन का पोषण बना रहता है।

जोहड़ परम्परा जब तक भारत में समृद्ध रही तब तक भारत में कहीं पर भी कोई भूमि (बेकार) पड़ती भूमि की श्रेणी में शामिल नहीं हुई, उसके दूसरे भी कारण थे, लेकिन जलधारा द्वारा होने वाले कटाव को तथा जमाव को रोकने का प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ जोहड़ों से होता रहता था।

जोहड़ों का पूरा एक चक्र होता है, यदि वह बना रहे तो इसकी मरम्मत आदि का झंझट भी नहीं होता, हर वर्ष गर्मियों के दिनो में लोग जोहड़ की मिट्टी निकालकर खेत में डाल लेते है, या घर बनाने के काम में लेते है। जिससे स्वतः ही जोहड़ बने रहते थे। जोहड़ों की मिट्टी कम्पोस्ट खाद की तरह काम में ली जाती है। इसलिए जोहड़ के आर्थिक महत्त्व के बारे में केवल इतना कंहना उचित होगा कि जोहड़ का सब कुछ "कामधेनु" गाय जैसा लाभकारी है।

जोहड़ आधारित खेती, पशुपालन से स्थाई विकास सम्भव है। यह हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक बेहतरी का ही, नमूना बन सकता है। क्योंकि जोहड़ यहाँ की भूगोलिक एवम् वातावरण के लिए भी अनुकूल है। इनका पारिस्थितिक एवम् पर्यावरणीय महत्त्व भी बहुत अधिक है जहाँ जोहड़ होगे वहाँ सुखा या बाढ़ आने की कोई संभावना शेष नहीं बचती।

जोहड़ से भूमि पुर्नसिंचन के कारण जमीन का आन्तरिक सन्तुलन बने रहने के साथ-साथ नये-नये वृक्षो को तथा घासो का जन्म होता रहता है, जिससे पशुओं के लिए चारा स्वतः पैदा होता रहता है। पशुओं तथा व्यक्तिओं की जल की आवश्यकता पूर्ति भी जोहड़ से होने के कारण व्यक्ति के श्रम एवम् समय की बचत होती है। इन सब लाभों का आर्थिक रुप में बदल कर देखना कठिन है। परन्तु ये सब व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रखते हैं।

उक्त प्रकार से जीवन व्यवहार एवम् आचरण में अति महत्त्व का स्थान होने के कारण ही ये जोहड़ हमारी सभ्यता एवम् संस्कृति को प्रभावित करते रहे हैं

जोहड़ : सामाजिक एवम् सांस्कृतिक बदलाव की प्रक्रिया को तेज कर सकते हैं

समाज, सभ्यता व संस्कृति में बदलाव की प्रक्रिया अपनी गति से चलती रहती है। लेकिन इसको प्रभावित करने वाले कारणों पर जब ध्यान देते है तो मालूम होता है, व्यक्ति की आवश्यकता ही इसका सबसे बड़ा कारण है। यह अपने तात्कालीन सुख व सम्मान के लिए, अपनी सुविधानुरूप बदलता रहता है। जैसा व्यक्ति बनता जाता है वैसा ही समाज, सभ्यता व संस्कृति बनती-बिगड़ती रहती है।

राजस्थान प्रदेश के लोगों ने अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु सदियों पूर्व जोहड़ बनाने के काम से अपने जीवन में राहत व सुख का अनुभव किया था, ऐसा काम करने वालों को दूसरे जो देखते थे वे सम्मान प्रदान करते थे तथा उनकी महिमा भी करते रहते थे। इसलिए यह काम यहाँ तीन सौ वर्ष पूर्व गुणात्मक रूप में बढ़ता गया। क्योंकि उस काम जोहड़ निर्माण करना व्यक्ति की प्रतिष्ठा बन गई थी। केवल व्यक्ति की प्रतिष्ठा नहीं पूरे समुदाय व समाज की प्रतिष्ठा गाँव के जोहड़ से जुड़ गई थी। जिस गाँव में जैसा जोहड़ होगा, वैसा ही उस गाँव की पहिचान व प्रतिष्ठा थी। लोग सहज रुप से कहते थे– "गाँव की कांई बात करोगा, उसमें समुद्र जैसे तालाब है, उठे का लोग भी समुद्र ही है"। राजस्थान के मरु क्षेत्र "थार" में तो आज भी गाँव के नाम तालाबों के नाम से जुड़े हुऐ है, तथा नहरी सिंचित क्षेत्र को छोड़कर गाँव की पहिचान तालाब से ही है। लड़के-लड़कियों की शादी तय करते समय वहाँ के पेयजल (तालाब) को ध्यान में रखते है। हमारे अलवर जिले का राजोरगढ़ व कॉकवाड़ी गाँव अपने तालाब के कारण ही पशुधन की दृष्टि से सबसे अधिक धनी था। यहाँ पर पुराने काल में बने गढ़ व किले इसकी समृद्धि के जीते जागते प्रमाण है।

मेवाल मीणों ने "क्यारा" को अपनी राजधानी इसलिए बनाई थी, क्योंकि यहाँ पर पुराना एक साधु का बनाया तालाब था, जिससे इन्हें यहाँ पेयजल सहज उपलब्ध हो गया था। तालाब बनाने वालों को लोग साधु-महात्मा या महाराजा कहते थे। ऐसा नहीं कि तालाब बनाने का काम केवल साधु-संन्यासी या राजा-महाराजा ही करते हो। गरीब लोग भी मिलकर करते थे, ये गरीब

व पिछड़े कहलाने वाले लोग भी यदि गाँव में कोई जोहड़ बना दे, तो उन्हें भी लोग धर्मात्मा या महाराज कहने लग जाते थे।

सूरतगढ़ गाँव में डेढ़ सौ वर्ष पूर्व एक गरीब "रेगर" ने स्वयं शरीर श्रम करके तथा अपनी कमाई पूंजी से एक तालाब बनाया था। उसे भी लोग धर्मात्मा कहने लगे थे। दूसरें के लिए सेवा भाव से शरीरश्रम करने वाले साधारण व्यक्ति को भी धर्मात्मा बनाने की ताकत हमारे समाज में ही थी। हमारा समाज श्रमाधारित था, हम अपनी इस महानता के कारण ही शायद किसी काल में "जगत गुरु" रहे हों।

लगभग 80 वर्ष पहले से राजस्थान के गाँव-गाँव एवं व्यक्ति-व्यक्ति तक पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव पहुँचने लगा था। इस शिक्षा ने पूरी सोच समझ के साथ हमारे समाज-सभ्यता एवं संस्कृति को जंगली, निकृष्ठ, एवं विकृत कहकर अनेकों प्रकार से बदमान किया था। जिसमें हमारे रहन-सहन, खान-पान, सभी पर बुरी तरह से चोट की गई थी। हम पर चोट करने वालों के हम गुलाम थे। इसलिए उनके द्वारा की जाने वाली चोट का हम पर बहुत तेजी से प्रभाव पड़ा, हम उनके षड़यंत्र का शिकार बनते ही चले गये। वे हमें अपनी पूंजी समझ कर हमारा उपयोग करते थे। जिसके परिणाम स्वरूप हमारा सब कुछ यहाँ तक हमारा सम्मान-अपमान भी पूंजी (लक्ष्मी) से होने लगा। हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लक्ष्मी के इस रुप में प्रवेश होने से हमारे ज्ञान (सरस्वती,) का प्रस्थान होने लगा। जिसके कारण समाज से भला-बुरा सोचने तथा विचारने की क्षमता समाप्त होती गई। हमारे जीवन में अन्धानुकरण ने अपना स्थान बना लिया। हम एक के बाद एक नई गलतियाँ करते चले गये। जिससे हमारे जीवन में सेवाभाव एवं श्रमशक्ति दोनों समाप्त होती चली गई। परिणाम स्वरूप हमारे पूर्वजों द्वारा तैयार किया हुआ समाज, सभ्यता, एवं संस्कृति टूटकर विकृत एवं विक्षिप्त होने लगी जिसमें से टूट-फुट को पुनः मरम्मत करने की गुजाईश भी बहुत कम रह गई। इस सबका प्रभाव यहाँ के जल प्रबन्ध अर्थात् जोहड़ों पर सबसे अधिक हुआ।

जोहड़ टूट गये या समय के साथ-साथ गाद से पूर गये उनकी पुनः मरम्मत नहीं की जा सकी। जो राजस्थान अब तक इन पर ही निर्भर था उन्हें नये-नये सपने दिखाये जाने लगा जो सपने या विकल्प दिखाये थे, वे भी पिछले 80 वर्षों में पूरे नहीं हुऐ आजादी मिले भी लम्बा समय बीत चुका। इस समय में एक नई बात यह हुई कि व्यक्ति के जीवन में प्रतिस्पर्धा ने जन्म ले लिया। जिसके कारण अच्छी-बुरी सभी गतिविधियाँ बढ़ी, व्यक्ति के जीवन में तेजी से बदलाव की प्रक्रिया चली, यह प्रक्रिया प्रायः उल्टी दिशा में ही चलती रही है। लेकिन कहीं-कहीं पर महात्मा गाँधी द्वारा दिखाये सपनों को साकार करने वालो ने समाज को ठीक दिशा में बदलाव की प्रक्रिया चलाने की कोशिश की। इस कोशिश के परिणाम आज कहीं-कहीं पर बदलाव देखने को मिल रहा है।

सामाजिक बदलाव

1. जिन गाँवों में जोहड़ निर्माण का काम आरम्भ हुआ है, वहाँ पर रहने वाले समुदाय को संघठित होने की आवश्यकता अनुभव हुई तो मिलकर जोहड़ निर्माण के काम के साथ समझ भी बढ़ने लगी।

2. गाँव संगठित होकर साथ-साथ काम करने से समाज में व्याप्त सामाजिक बुराई, बाल-विवाह, को बुरा समझा जाने लगा। अनेकों गाँवों ने मिलकर बाल-विवाह नहीं करने के सामुहिक निर्णय किए है। जिनमें देवरी, भाँवता, माण्ड़लवास, गोपालपुरा मुख्य गाँव है। यहाँ पर बाल-विवाह रुक गया है।

3. झूठी शान शौकत व दिखाने को बुरा माना जाने लगा तथा उसकी सामाजिक निन्दा आरम्भ हुई है। यह काम गोपालपुरा में नाथी नामक महिला जो की तरूण भारत संघ की महिला कार्यकर्ता है उसने आरम्भ किया है। इस महिला ने अपने पति की मृत्यु के बाद कर्ज लेकर बड़ा भोज-नुक्ता करने से मना कर दिया, तब इसे गाँव के कुछ लोगों ने कहा तो इस महिला ने उनसे कहा कि आप नुक्ता करना चाहते हो तो मिल जुलकर आप ही कर दो मैं इस सब खर्च को कर्ज नहीं मानूंगी, नहीं इसे पुनः लौटाऊंगी। इस महिला के इस कथन ने जादू का काम किया। फिर जो कर्जा देकर नुक्ता कराने पर जोर दे रहे थे, वे सब चुप हो गये। महिला एक छोटा सा भोज करके कर्ज से बच गई फिर बाद में तो इस महिला की समस्त ग्रामवासियों ने महिमा की। यह महिला तालाब निर्माण के काम में से ही संस्था के साथ जुड़ी थी। इस घटना के बाद से कर्ज लेकर नुक्ता करना प्रतिष्ठा का काम नहीं माना जाता। यह अब धीरे-धीरे समाप्त होने लगा है। इस प्रकार ऊपरी दिखावा रुक रहा है।

4. जहाँ पर जोहड़ निर्माण के लिए लोग तैयार होते है, वहाँ पर मिल जुलकर काम करते समय शराब मुक्ति करने की चर्चा होती है, तथा जोहड़ निर्माण का काम पूर होने तक लगभग गाँव इस बात के लिए तैयार हो जाता है। अन्त में सम्पूर्ण गाँव द्वारा शराब मुक्ति का संकल्प ले लिया जाता है। कुछ गाँवों में शराब जैसी बुराई से मुक्ति पाने का संकल्प जोहड़ का काम आरम्भ करने से पूर्व ही ले लिया जाता है। जिसके परिणाम-स्वरूप गाँव व्यसन मुक्ति होकर संगठित हो जाता है। इससे गाँव की सुख-समृद्धि का रास्ता साफ होने लगता है।

5. जोहड़ सबके लिए होता है, इसलिए भाईचारा, आपसदारी निभाने के बाद ही इसका रख-रखाव सम्भव होता है। इसका रख-रखाव करना इनकी आवश्यकता होती है, इसलिए ये जोहड़ लोगों की आपसदारी व पड़ोसीपन निभाने व सिखाने का अच्छा अवसर एवं माध्यम है।

सांस्कृतिक बदलाव

1. नीमाला गाँव के महादेव मीणा, जिसकी उम्र कुल 16 वर्ष होगी। इस तरूण ने गाँव क्यारा के जोहड़ को बनाने में सबसे अधिक काम किया था। इसलिए सारे गाँव ने मिलकर कहा कि इसे सम्मानित किया जाना चाहिए। ऐसी घटना और भी कई गाँव में देखने को मिली है। जोहड़ निर्माण श्रम प्रधान सेवा का काम है। काम करने वालों को सम्मानित करने का भाव गाँव के लोगों में जाग्रत होना सिद्ध करता है कि ग्रामवासियों में सेवा व श्रम के प्रति आज भी सम्मान के भाव शेष है। अवसर मिलने पर ये भाव जाग्रत होते रहते हैं।

2. गुर्जरों की लोसल, तथा देवरी गाँव के लोगों ने जोहड़ बनते ही उसके जल ग्रहण क्षेत्र की सीमा पर जल स्तम्भ गाढ़ दिया। दूसरा पत्थर जलागमन क्षेत्र की सीमा पर गाढ़कर लाल सिन्दूर से पोत दिया। इसका अर्थ यह है कि जहाँ से जल इस तालाब में आत है, वहाँ कोई शौच

(निबटने), नहीं जावे तथा अन्य कोई गन्दगी नहीं फैलावे। जल ग्रहण (भराव) क्षेत्र में कोई शौच के हाथ नहीं धोवे, यहाँ से पात्र में जल, लेकर उस पत्थर से दूर काम में लेवे। शुद्धता बनाये रखने की संस्कृति ने जन्म लिया।

3. अब तक तरूण भारत संध द्वारा जो जोहड़ बनाये गये है। गाँववासियों ने स्वतः ही इन सभी जोहड़ों पर पीपल-बरगद, गुलर के पेड़ लगाये है। ये पेड़ इनको ही आवश्यकता पूर्ति हेतु कहे जा सकते है। लेकिन हमे इनका सांस्कृतिक महत्त्व अधिक स्पष्ट नजर आता है। हमने महत्त्व जानने के लिए क्षेत्र के 250 बुर्जर्ग जानकार लोगों को 27-28 जुलाई 1991 को तरूण आश्रम में बुलाये थे। तब यह बात सर्व सम्मति से सब ने स्वीकार की थी, कि गुलर के पेड़ में ब्रह्म, पीपल के पेड़ में विष्णु एवं बरगद में शंकर विराजते है। जोहड़ हमारा मन्दिर है, उस पर ये वृक्ष भगवान की मूर्ति स्वरूप है। जिस प्रकार मन्दिर बिना मूर्ति के खण्डहर है, गाँव में खण्डित मन्दिर का पाप लगता है, इस पाप से बचने हेतु गाँव मे जोहड़ बनाकर उसे पुरा करने के लिए जोहड़ पर वृक्ष लगाना अत्यन्त आवश्यक है। यह वृक्ष जोहड़ पर देव मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा जैसा है।

4. बच्चे के जन्म के समय जोहड़ के जल का पूजन करने के विषय में "क्यारा" निवासी रामनाथ मीणा जी का कहना है, गाँव का जोहड़ सबसे बड़ा तीर्थ है। यह अमर तीर्थ है, इसी के जल पूजन का बड़ा माहत्म है। पुण्य है। क्योंकि गाँव के लोगों पशुओं तथा पक्षियों के जीवन का आधार ये जोहड़ ही है। इस जल के सान्ध्यि में रहने वाला व्यक्ति बुद्धिमान होता है। यह धर्म-अधर्म को समझ कर पालन करता है।

5. मातम में एवं संस्कार की शुद्धि तथा सूतक उतारने के लिए जोहड़ का जल ही उपयुक्त होता है, क्योंकि यह जल मिट्टी व सूर्य की किरणों में संपर्क में रहने के कारण मानव शरीर को शुद्धता बनाये रखने के लिए सक्षम हो जाता है। इसलिए यह अन्तिम संस्कार की शुद्धि के साथ-साथ हृदय को ताकत प्रदान करने वाला होता है।

6. जोहड़ के पास रहने वाला व्यक्ति प्रकृति प्रेमी होता है। पंच महाभूतो को अधिक समझकर इनकी शुद्धि बनाये रखने के लिए जागरूक होकर काम करता है। क्योंकि जोहड़ का आधार ही पंच महाभूत है। मिट्टी में रुका जल, ताप और वायु के कारण शुद्ध बना रहता है। इसका सेवन करने वाला व्यक्ति पंच महाभूता को सदैव समझता है तथा इनमें आस्था भी रखता है। इस प्रकार व्यक्ति का जीवन प्राकृतिमय बना रहता है तथा भोगवादी संस्कृति से बचाये रखने वाला है। क्रास्का निवासी गणपत सिंह गुर्जर ने कहा कि हम सदियों से जोहड़ का पानी पीते आ रहे है। हमें बाहर की हवा नहीं लगती हम तो अपने जोहड़ के पानी को पीकर यहीं मस्त रहते है, दुनिया में कुछ ही हो हमें कुछ लेना देना नहीं है। ये गांव आज भी लोग जोहड़ का पानी पी रहे है, भारतीय प्राचीन परम्परा के जीते जागते प्रमाण है। इनमें, आपसदारी, सहिष्णुता, सहजता, सरलता जीवन की सरलता व सजगता मौजूद है।

7. जोहड़ से ग्रामवासियों में स्वावलम्बन की संस्कृति पोषित होती है। इसे लोग अपना मानकर स्वयं करते है, इसलिए किसी बाध्य व्यवस्था या सरकारों के ऊपर की निर्भरता नहीं रहती है।

8. जोहड़ का निर्माण लोगों के अपने ज्ञान से होता है। इसलिए लोगों में आत्म विश्वास वनता रहता है, जिसके कारण प्राचीन संस्कृति पुर्नजिवित होने या बनी रहने की अधिक संभावनायें वनी रहती है।

9. जोहड़ की देखभाल करना आसान काम है। जिसे एक छोटा ग्राम समुदाय आसानी से करता रहता है। इस काम के लिए सभी के श्रम की आवश्यकता होती है। इसलिए आपस में मिल बैठकर काम करना ही पड़ता है। इस प्रकार गाँव में भागीदारी पूर्ण निर्णय प्रक्रिया स्वतः चालू हो जाती है। जिससे गाँव मे समानता, आपसदारी का वातावरण बन जाता है। अतः जोहड़ समानता व आपसदारी एवम् सह-अस्तित्व की संस्कृति को क्षितिज तक रख सकता है।

10. अनुशाषित रहने तथा मर्यादित उपयोग करने की पूरे गाँव की एक पाठशाला के रुप में गाँव का जोहड़ भी होता है। जोहड़ का पानी शुद्ध वनाये रखने के लिए बहुत से "गाँवाई दस्तूरों" का पालन कराने के लिए कोई बाहर की व्यवस्था नहीं होती, बल्कि लोग स्वयं मिलकर अपने गाँवाई दस्तुर बनाते है, जिनका पहले स्वयं पालन करते है। जल का उपयोग भी आवश्यकतानुरूप करते रहते है। इसको अलग से अपने लिए संग्रह करके नहीं रखा जा सकता और यदि कोई बिगाड़ करने की कोशिश करता है, तो उसे भी कष्ट भोगना पड़ता है। इस विषय में गाँव में विभिन्न प्रकार की मान्यता है कि जोहड़ की जमीन पर कब्जा करने वालों का पुशधन नष्ट हो जाता है। पाल तोड़ने वाले की संतति बीमार होती या हाथ-पैर टूट जाते है, जो जोहड़ का पानी गंदा करता है, उसे पेट की बीमारी हो जाती है। जो इसकी पाल बनाता है। उसे पुण्य मिलता है यहाँ एक कहावत बड़ी प्रचलित है :

"सौ हाथ की नाल, एक हाथ की पाल" इसका भावार्थ है, कि सौ हाथ कुंऐ की नाल का पुण्य एक हाथ जोहड़ की पाल के बरावर है। अर्थात् एक जोहड़ सौ कुंओं के बराबर कल्याणकारी या हितकर है। कुंआँ दूसरे की कमाई के समान है, अर्थात् यह जल दूसरे के पेट के पानी जैसा है तालाब का जल अपनी मेहनत की कमाई जैसा है। लोग सोचते है कि हमने जो वर्षा जल रोका है, उसको उपयोग करना हमारा प्राकृति प्रदत्त हक है। जहाँ जो जल प्रकृति ने दे दिया उसे वहीं ठीक से उपयोग करने का पहला हक वहाँ के उस लोागें को है। परम्परा चालू होने पर ही सांस्कृतिक वदलाव की प्रक्रिया आरम्भ होगी। आज के वड़े-वड़े बाँध बनाकर कुछ ही लोगों का हित करने की भोगवादी केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति आगे चलकर स्वयं समाप्त हो जायेगी तथा श्रम आधारित, सेवाभावी संस्कृति जन्म लेने लगेगी।

जोहड़ : प्रकृति का संरक्षण करके सबको रोजगार दे सकता है।

हमारे देश के प्राकृतिक संसाधन आज भी साढ़े पाँच लाख गाँव की कुल आवादी को पूर्ण रोजगार दे सकते है। हम अपनी सही सोच-समझ के साथ अपने संसाधनों की क्षमता को आँककर उसका ठीक प्रवन्ध करने हेतु जोहड़ निर्माण का काम करें। जिससे हमारे प्राकृतिक संसाधन बढ़ेगे। खेती, पशुपालन में स्वावलम्बन के साथ जंगल, पेड़-पौधे पनपने लगेगे जिसके कारण खेती की भूमि बढेगी, गोचर विकास होगा।

हमें रोजगार योजनाओं में कुछ बातों का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है नये सृजित रोजगार पुराने रोजगारों पर कोई बुरा प्रभाव नहीं डालें। प्राकृतिक विनाश किये बिना नया उत्पादन

करते हों। उत्पादक एवं उपभोक्ता को जोड़ता हो। उत्पादन का लाभ विकेन्द्रित हो। लोगों का स्वास्थ्य, स्वाभिमान, स्वतन्त्रता एवं समानता को बरकरार रखे या अनुकूल दिशा में बढ़ायें। पर्यावरण सन्तुलन बनाये रखे। इन सब बातों पर ध्यान रखकर बनायी गयी रोजगार योजना निश्चित ही प्राकृतिक संसाधनों को समाप्त नहीं होने देगीतथा लोगों के लिए सहज ही सदैव नये रोजगार सृजित करने की क्षमता पैदा करती रहेगी।

हमारे सभी धर्म-शास्त्रों में प्रकृति की हिफाजत (संरक्षण) करने के निर्देश देने के पीछे मूल मन्तव्य यही था। इसलिए हम सब अब तक बचे रहे। पर्यावरण सन्तुलन भी बना रहा लेकिन अब व्यक्ति का अपना आचरण व्यवहार सब बदल गया। व्यक्ति प्रकृति का भोग करने लगा है। ये भोगी कभी यहीं नहीं सोचता कि इसका परिणाम क्या है। उपयोगकर्ता प्रत्येक द्रव्य का उपयोग करने से पहले उसके परिणामों पर गहनता से विचार करता है। उपयोग कर्ता पूरे विचार के बाद ही प्रकृति से अपने काम के लिए कुछ लेता है उतना ही प्रकृति को लौटा देता है, तथा मर्यादित प्रयोग का विचार करता है। विचार का अर्थ विद्वानों से विचार-विमर्श करके भूमि पूजन करने के बाद ही भूमि से उतना ही लेता है, जितना स्वयं के लिए अति आवश्यक हो। लेकिन आज भोगकर्ता तो स्वयं के सुख व स्वार्थ हेतु जमीन का दोहन करते ही जा रहे हैं। दूसरों को भी यह सब करने हेतु प्रेरित करते है। यह भी तब तक करते है, जब तक स्वार्थ पूर्ति होती है, जब उसे अन्य व्यक्तियों की जगह मशीन मिलने लगती है, तब वह सब कुछ भूल जाता है।

केवल अपने हित के लिए पहले खोदकर कुछ निकालने में लोग संकोचझिझक अनुभव करते थे। लेकिन अब ऐसा करना प्रतिष्ठा का काम बन गया है। पहले लोग प्रकृति के नियम कानून का अनुशाषित होकर पालन करते थे, जितना प्रकृति से लेते थे, उतना ही प्रकृति को उसके लिए उपयोगी रूप में वापस देते रहते थे। लोग जानते थे, कि प्रकृति के स्वभाव को बिना समझे इसके साथ छेड़छाड़ की तो प्रकृति क्रोधित हो जायेगी। लोग प्रकृति के क्रोध से डरते थे। लोगों की शास्त्रों में आस्था थी। इन सब ही शास्त्रों मे प्रकृति की हिफाजत करने की दिशा प्राप्त होती रहती थी। लोग इन सबका नित्य ही अपने जीवन में पालन करते थे। आज हम अपने शास्त्रों को नकार रहे है। प्रकृति से दूर जा रहे है। शास्त्रों में वन विनाश के कुप्रभावों से सचेत किया जाता था, जै "कियते यंत्र विच्छेदः सपुरुष पुलिन नस्तरोंः अनावृष्टि मय घोर तस्मिन देरो सुजायेते।"

जंगल प्रकृति का शृंगार होते हुए लोगों के जीवन के लिए भी अति आवश्यक है, यह भी प्रकृति के क्रोध का शमन करता है, अर्थात् अकाल बाढ़ नहीं आने देता। इसका पूर्ण ज्ञान यहाँ के लोगों में प्रचलित था, तथा इसके अनुकूल लोग सहज आचरण करते थे। वेदों-पुराणों में वनों का विस्तृत वर्णन इसका प्रमाण है। कोटिल्य अर्थ शास्त्र में वन प्रबन्ध का एक पूरा अध्याय है। जिसमें तत्कालीन वन नियम वन संरक्षण और उनमें पाये जाने वाले जानवरों के संरक्षण के उपाय लिखे थे। जंगल में रहने वाले साधु-सन्यासी का वनों एवं वनोपजो का स्वास्थ्य रक्षण हेतु उपयोग ज्ञान प्राचीन परम्परा की महानता है।

गाँव के लोगों का वास्तविक जीवन आधार जोहड़ जंगल था, क्योंकि प्राचीन काल में हम पशुपालन पर ही निर्भर थे। पशु जंगल में चरकर पेट भर लेते थे। पीने के लिए जोहड़ में

पानी मिल जाता था। दूध पीकर हम अपना जीवन निर्वाह करते थे। बाद में खेती होने लगी तो भी जोहड़ व जंगल का उपयोग लोग समझते गये, क्योंकि जंगल में पेड़ों की टहनी पत्तियां जो लगभग एक हैक्टर में 5 टन तक या इससे भी अधिक होती थी इससें भूमि की उर्बरा शक्ति बनी रहती थी, तथा जोहड़ों, मृदा, जल, जल स्तर बना रहता था। इससे जमीन की रन्धता तथा रसायनिक गुण भी सन्तुलित बने रहते थे। सघन वनों में तो जमीन स्पंज का काम करती थी जगह-जगह पर बने जोहड़ न केवल सतही बहाव कम करते थे, बल्कि इनसे पूर्ण रूपेण भूसंरक्षण होता था, तथा जमीन की जल क्षमता बढ़ती रहती थी। इसी कारण बाढ़ नियंत्रण होकर, नदी-नाले निर्बाध रुप से बहते रहते थे। इन नदी नालों से सिंचाई करके खेती करते थे। बाद में भी लोग नदी नालों से दूर बस कर बड़े-बड़े जोहड़ बनाकर उससे सिंचाई करके खेती द्वारा अपना जीवन निर्वाह करते रहे। कभी बेरोजगारी जैसी समस्या नहीं आई, इस समस्या का जनम तो तब हुआ जब प्रकृति को केवल दोहन करके भोग की वस्तु मान लिया गया। जोहड़ को प्रकृति के सर्वद्धन का सशक्त साधन नहीं माना। ऐसा हमारी हीन विचार धारा के कारण ही हुआ होगा। क्योंकि लम्बी गुलामी भुगतने वाला व्यक्ति अपने आपकों हीन समझने लगता है। इसलिए हमारे यहाँ जो हुआ वह स्वाभाविक ही था। गुलाम अपने मालिक को देखकर वैसा ही आचरण भी करते है।

जब तक हमने प्रकृति का मर्यादित उपयोग किया तब तक लोगों को रोजगार मिलता रहा तथा प्राकृतिक संसाधन भी बने रहे। लेकिन जब व्यक्ति भौतिकवादी अविष्कार करके प्राकृतिक सृजन का हनन करने लगा तो इस वृति के कारण मनुष्य आज ही मुर्गी के पेट से सोने का अण्डा निकालना चाहता है। इससे प्रकृति का विनाश आरम्भ हो गया। महात्मा गाँधी जैसे अनेक चिन्तनशील व्यक्तियों ने इस प्रवृति को रोकने के बहुत प्रयास किये। फिर भी आजादी के बाद प्रथम तीन दशकों में 45 लाख हैक्टर सघन वन क्षेत्र अब बंजर में बदल गये हैं। इन पर अब खेती भी नहीं हो पा रही है। क्योंकि जमीन का जल खत्म हो गया, क्षेत्र के जल स्त्रों सूख गये है। जमीन में पुर्नः सिंचन होता रहता था वे तो खत्म हो गये इसलिए भूजल खत्म होना ही था।

मानव की प्रकृति के साथ बिना सोचे समझे छेड़छाड़ से रासायनिक प्रदूषण, अम्लीय वर्षा, वायुमण्डल में सतत बढ़ रही कार्बन डाई आक्साईड, आणविक कचरा, ओजोन परत का ह्रास आदि के परिणाम स्वरूप पारिस्थितिकीय संकट पैदा हो गये है। उन्हें अब भी गाँव में ही रोजगार देने वाले गाँवाई जोहड़ जंगल, गोचर खेती पशुपालन को ठीक रुप में बढ़ाना होगा। जिससे देश के आधार गाँव की जीवन प्रणाली संकट में नहीं पड़े और गाँव के लोग रोजगार के लिए गाँव में ही रुक जायें। अर्थात् देश की आधारभूत रोजगार व्यवस्था जो टूट गई वह पुनर्जीवित हो सके।

अब भी समय है, हम ग्राम जीवन प्रणाली को पुनर्जीवित करें, गाँव के सामलात देह जोहड़ (जल) जंगल, जमीन का उपयुक्त प्रबन्ध करने में अपनी ऊर्जा लगायें। इस काम में ही रोजगार सृजन होगा। इसी से देश बचेगा और देश बनेगा।

तरूप भारत संघ, भीकमपुरा-विक्षोरी, वाया-थानागाजी, जिला-अलवर (राज०) 301022

उपलब्धियाँ

जनवरी 86 से 2 अक्टूबर 1991 तक

क्रमांक	विवरण	पंचायत समिति क्षेत्र: जनवरी 86 सेजनवरी 1991 तक				जिला क्षेत्र: फरवरी 20 से 2 अक्टूबर 1991 तक			
		थानागाजी	राजगढ़	उमरैण	योग	अलवर	स० माधोपुर	जयपुर	योग
1.	जोहड़	78	32	6	116	47	6	3	56
2.	कुआँ	2	-	1	3	-	-	-	-
3.	पेड़ संरक्षण (गाँव)	42	53	7	102	-	-	-	-
4.	मेड़ बन्दी	5	15	-	20	-	-	-	-
5.	सेन्द्रीय खाद निर्माण प्रदर्शन	13	2	-	15	19	-	-	19
6.	सौर ऊर्जा इकाई	8	2	-	10	10	-	-	10
7.	शिशुपालना ग्रह	5	7	2	14	14	-	-	14
8.	बाल श्लाएँ	2	6	3	11	3	-	-	3
9.	आरोग्य केन्द्र	6	4	-	10	3	-	-	3
10.	महिला बैंक	3	2	-	5	2	-	-	2
11.	शराब बन्दी गाँव की संख्या	11	10	3	24	35	-	-	35
12.	सक्रिय ग्रामसभा	42	53	7	102	57	6	2	65

oct 93

क्रमांक	विवरण	पंचायत समिति क्षेत्र जनवरी 86 से जनवरी 1991 तक				जिला क्षेत्र फरवरी 20 से 2 अक्टूबर 1991 तक			
		थानागाजी	राजगढ़	उमरैण	योग	अलवर	स० माधोपुर	जयपुर	योग
13.	ग्राम कोष	22	35	3	60	7	-	-	7
14.	प्रशिक्षण शिविर	38	32	20	90	95	2	7	104
15.	सम्मेलन (महिला)	3	2	4	9	-	-	-	-
16.	पदयात्रा	8	8	8	8	-	-	-	-
17.	पेयजल जागरूकता (ग्रामसभा)	-	-	10	10	-	-	-	-
18.	जंगल संरक्षण (गांव की संख्या)	-	-	-	-	150	6	3	159
19.	गोचर विकास	-	-	-	-	5	1	1	7
20.	जंगल संरक्षण यज्ञ	-	-	-	2	-	-	-	2
21.	पर्यावरण प्रेमी पुरूस्कार	-	-	-	-	21	-	-	21
22.	सरिस्का बचाओ चेतना विवाद	-	-	-	3	-	-	3	
23.	सुलझाये गये अपसी विवार	-	-	-	-	90	-	-	90
24.	दहेज मुक्त शादी	-	-	-	-	2	-	-	2
25.	पुराने जोहड़ों से कब्जे हटाना	-	-	-	-	7	-	-	7
26.	जंगल से अतिक्रमण हटाये गये परिवारों की संख्या	-	-	-	-	117	-	-	117
27.	जोहड़ों पर शोध कार्य	-	-	-	-	1	-	-	1

क्रमांक	विवरण	पंचायत समिति क्षेत्र जनवरी 86 सेजनवरी 1991 तक				जिला क्षेत्र फरवरी 20 से 2 अक्टूबर 1991 तक			
		थानागाजी	राजगढ़	उमरैण	योग	अलवर	स० माधोपुर	जयपुर	योग
28.	याचिका उच्चतम न्यायलय में सरिस्का जनहित हेतु	-	-	-	-	1	-	-	1
29.	जंगलों को आग से बचाने हेतु प्रशिक्षण	-	-	-	-	8	-	-	8
30.	खनन का सरिस्का के लोगों पर प्रभाव जानने हेतु शोध	-	-	-	-	1	-	-	1
31.	पारिस्थितिकी खेती प्रयोग क्षेत्र	-	-	-	-	1	-	-	1
32.	सरिस्का के विद्यालयों में पर्यावरण प्रशिक्षण शिविर	-	-	-	-	17	-	-	17
33.	पेड़ लगाओं पदयात्रा	-	-	-	-	2	-	-	2

नोट : प्रतिवर्ष लगाए गए पेड़ों की संख्या सवा लाख।

तरुण भारत संघ

वर्ष 1984 से 1991 तक हिसाब-किताब

वर्ष	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम	कुल रकम
1984	टी. डी. एच. जर्मनी	क्षेत्रीय अध्ययन	6,100	6,100
1985	स्थानीय चंदा	जागृति शिविर तथा ऑफिस खर्च	15,506	15,506
1986	1. बनवासी सेवा आश्रम मिर्जापुर	शिक्षा व स्वास्थ्य कार्यक्रम	30,000	
	2. राजस्थान सेवक संघ ट्रस्ट	ऑफिस व्यवस्था	4,200	
	3. महाशय भगवान दास ट्रस्ट, अलवर	ऑफिस व्यवस्था	1,200	
	4. गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली	पर्यावरण शिविर हेतु	2,007	
	5. राजेन्द्र सिंह (दान)	ऑफिस खर्च व्यवस्था	4,500	
	6. पर्यावरण विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली	पर्यावरण जागृति हेतु	6,750	48,657
1987	1. बनवासी सेवा आश्रम	शिक्षा व स्वास्थ्य कार्यक्रम	20,000	
	2. साउथ एशिया पार्टनरशिप	शिक्षण कार्यक्रम	43,561.08	
	3. आक्सफेम इंडिया ट्रस्ट	बांध निर्माण व स्वास्थ्य कार्यक्रम	5,32,500	
	4. इको, नीदरलैंड	समग्र शिक्षण व ग्रामीण विकास कार्यक्रम	87,755.95	
	5. राजस्थान पर्यावरण विभाग जयपुर	परिस्थिति की शिविर	7,000	
	6. कपार्ट, नयी दिल्ली	गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम (संगठन-निर्माण व जागृति)	29,300	
	7. पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकर	पर्यावरण जागृति शिविर	17,000	
	8. समाज कल्याण बोर्ड	महिला जागृति शिविर	8,000	
	9. राजस्थान सेवक संघ ट्रस्ट, जयपुर	ऑफिस व्यवस्था	8,400	

	10. भगवास दास ट्रस्ट, अलवर	ऑफिस व्यवस्था खर्च	1,800	
	11. संपूर्ण क्रांति विद्यालय, वेड़छी	ग्राम स्वराज्य संबंधी कार्यक्रम	2,800	
	12. फुटकर प्राप्ति (चंदा)	विविध खर्च	5,672	7,63,789.03
1988	1. कपार्ट	(क) सौर ऊर्जा		93,200
		(ख) अकाल राहत	2,25,000	
	2. पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार	पर्यावरण जागृति	45,000	
	3. राजस्थान पर्यावरण विभाग, जयपुर	पर्यावरण शिविर	7,000	
	4. वन विभाग, अलवर	नर्सरी	8,054.40	
	5. समाज कल्याण बोर्ड	(क) महिला जागृति	40,000	
		(ख) शिशु पालना गृह	1,59,648	
	6. राजस्थान सेवक संघ ट्रस्ट जयपुर	ऑफिस व्यवस्था	5,500	
	7. दान	विविध खर्च हेतु	1,39,447	
	8. आक्सफेम इंडिया ट्रस्ट	बांध निर्माण व स्वास्थ्य कार्यक्रम	2,70,000	
	9. साउथ एशिया पार्टनरशिप दिल्ली	शिक्षण कार्यक्रम व लाइब्रेरी	15,247	
	10. इको, नीदरलैंड	समग्र शिक्षण एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रम	1,53,050	11,61146.40
1989	1. पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकर	पर्यावरण जागृति	19,300	
	2. केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नयी दिल्ली	शिशु पालना गृह	57,115	
	3.स्थानीय दान व चंदा	विविध कार्यों हेतु	1,49,767	
	4. विभिन्न मदों से	विविध कार्यों हेतु	48,021.33	
	5. समग्र सेवा संघ, जयपुर	कार्यालय व्यवस्था	1,13,535	
	6. कपार्ट	(क) अकाल राहत	1,90,000	
		(ख) पेयजल जागृति	18,000	
	7. केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, दिल्ली	(क) शिशु पालना गृह	13,535	
		(ख) महिला जागृति शिविर	24,000	

	8. पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार	पर्यावरण शिविर	18,000	
	9. राजस्थान पर्यावरण विभाग, जयपुर	पारिस्थितिकी विकास शिविर	8,000	
	10. ग्राम नियोजन केन्द्र, गाजियाबाद	सूखा निवारण शिविर	6,500	
	11. शिक्षा कर्मी बोर्ड, जयपुर	सर्वे हेतु	3,000	
	12. इको, नीरदलैंड	समग्र शिक्षण एवं ग्रामीण विकास	1,14069	
	13. आक्सफेम, दिल्ली	स्वास्थ्य व अकाल राहत	3,27.500	10,97,952.33
1990	1. पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार	पर्यावरण शिविर	15,000	
	2. उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर	प्रशिक्षण	15,000	
	3. राजस्थान पर्यावरण विभाग,	पारिस्थिति की विकास शिविर	15,000	
	4. कपार्ट	(क) गलीचा बुनाई कार्यक्रम हेतु	84,350	
		(ख) पेयजल जागृति शिविर	19,000	
	5. समाज कल्याण बोर्ड	शिशु पालना गृह	1,76,610	
	6. राजस्थान शिक्षा कर्मी बोर्ड, जयपुर	शिक्षा कर्मी-परियोजना	82,501.23	
	7. ग्राम नियोजन केन्द्र गाजियाबाद	सुखा निवारण शिविर	11,500	
	8. केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नयी दिल्ली	पिछले वर्ष का बकाया	64,857	
	9. दान-चंदा प्राप्ति	विविध कार्यों हेतु	85,768	
	10. इको, नीदरलैंड	समग्र शिक्षण एवं ग्रामीण विकास	3,75,009	
	11. आक्सफेम	अकाल राहत एवं स्वास्थ्य कार्यक्रम	3,33,800	
	12. गांधी पीस सेंटर	तालाब निर्माण	15,000	12,93,395.23
1991	1. केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, दिल्ली	शिशु पालना गृह	1,67,430	

2. पर्यावरण विभाग, जयपुर	पारिस्थिति की विकास शिविर	10,000	
3. पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार	पर्यावरण जागृति	16,000	
4. स्वास्थ्य मंत्रालय, दिल्ली	स्वास्थ्य कार्यक्रम	4,20,200	
5. विकास विकल्प संस्था, दिल्ली		16,000	
6. समाज कल्याण बोर्ड		36,406	
7. कपार्ट		28,205	
8. दान		75,762	
9. आक्सफेम इंडिया ट्रस्ट दिल्ली	स्वास्थ्य कार्यक्रम	73,700	
10. इको, नीदरलैंड	समग्र विकास	6,51,959	
11. गांधी पीस सेन्टर	बांध निर्माण	1,25,000	
12. इंटर कोआपरेशन स्विटजरलैंड	बांध निर्माण	5,43,500	21,64,162
	कुल योग :		65,50,707.99